राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 45 ■ अंक 11 ■ फरवरी 2024 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 40

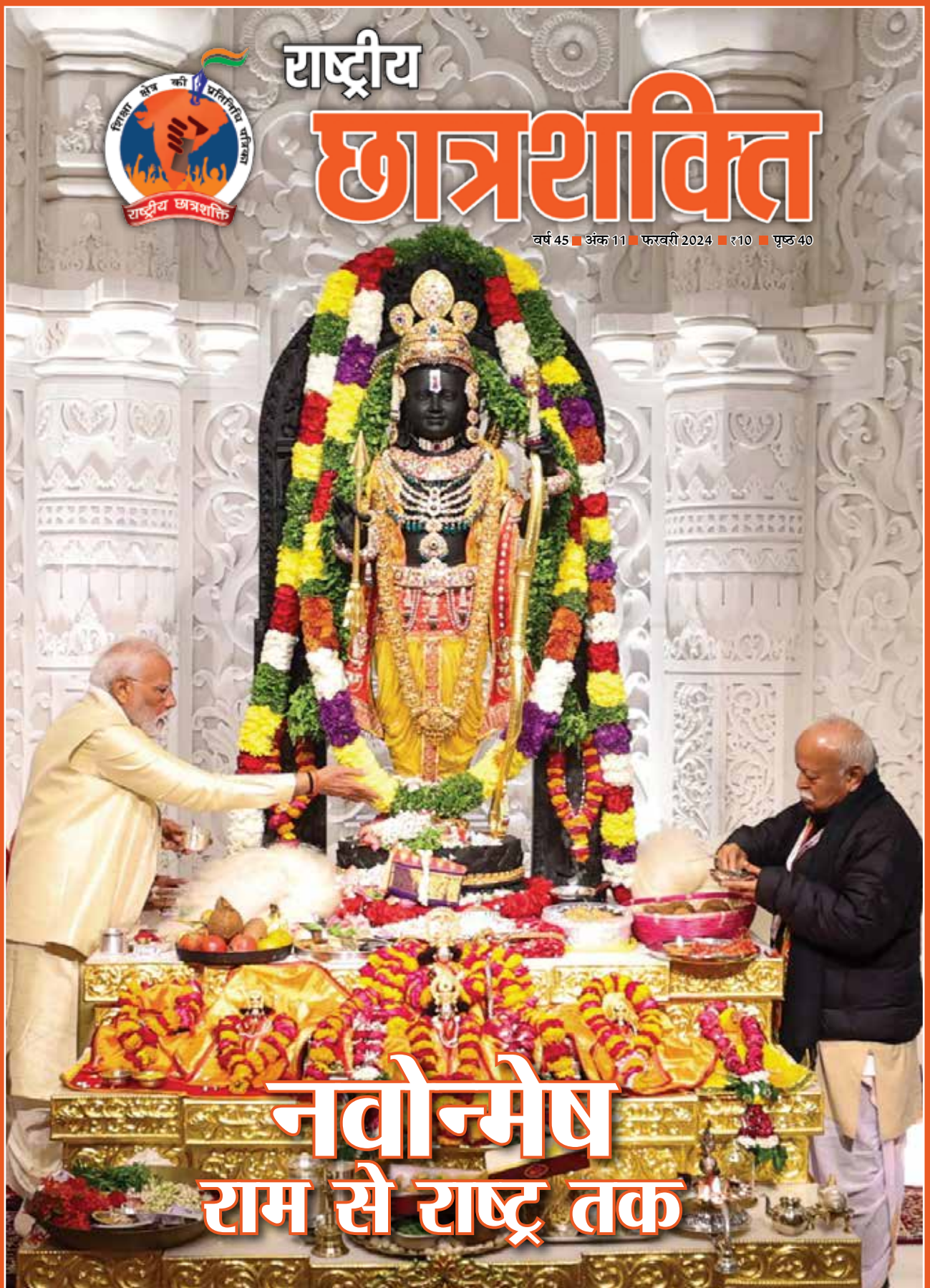

नवोन्मेष
राम से राष्ट्र तक

युवा दिवस की झलकियां

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
राष्ट्रीय युवा दिवस
अमर तिरंगा यात्रा
(स्वामी विवेकानंद जयंती)
ABVP
संगोष्ठी
विचार संगोष्ठी

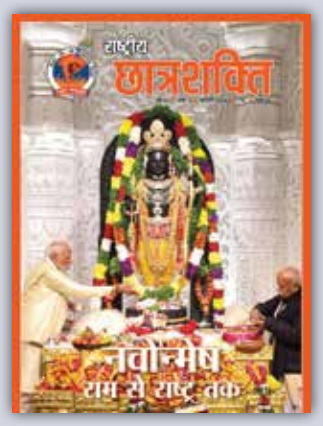

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 45, अंक 11
फरवरी 2024

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नई दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित। **संपादक** *पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार।

अबकी बार

05 **पुनः विराजे रामलला**

विक्रम सम्वत 2080, पौष शुक्ल द्वादशी तिथि अर्थात 22 जनवरी 2024 का दिन। यह वह दिन था, जब सरयू तट स्थित...

संपादकीय 04
भारत के उत्कर्ष का साक्षी बनेगा भव्य राम मंदिर : नरेन्द्र मोदी 07
अयोध्या में भारत का 'स्व' लौटकर आया: डा. मोहन भागवत 09
मंदिर वहीं बना, जहां बनाने के लिए संकल्प लिया : योगी आदित्यनाथ 11
रामरस में डूबी अभाविप 12
सदियों के संघर्ष की साक्षी अयोध्या 13
मंदिर आन्दोलन : मील के पत्थर 15
कर्तव्य पथ पर लहराया नारी शक्ति एवं भारतीयता का परचम 23
Former VICE PRESIDENT OF ABVP M. K. SRIDHAR HONORED WITH PADMA SHRI 26
जेएसएससी सीजीएल परीक्षा पेपर लीक के विरोध में अभाविप का प्रदर्शन 27
शिक्षा क्षेत्र में की गई बढ़ोत्तरी का अभाविप ने किया स्वागत 28
कांग्रेस सरकार के कारण शिक्षा क्षेत्र में पैदा हुए संकट 29
भारतीय भाषाओं में पाठ्यसामग्री की उपलब्धता से दूर होगी छात्रों की समस्या 30
U.N. Security Council a victim of geopolitical rivalry 31
जानलेवा हमले में छह छात्र घायल, तृणमूल छात्र परिषद से जुड़े हैं अराजक तत्व 33
वैश्विक मानव थे अपने नंदाजी : दत्तात्रेय होसबाले 34
कड़ाई से लागू किए जाए कोचिंग केन्द्रों के नियमन संबंधी दिशा–निर्देश : अभाविप 36
धूमधाम के साथ मनाई गई स्वामी विवेकानंद जयंती 37

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

कृतार्थता की अनुभूति से मन आह्लादित है। रोम-रोम रोमांचित। शताब्दियों का संघर्ष सार्थक हुआ, प्रतीक्षा पूरी हुई। भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा है। आंखें अश्रुपूरित। हर भारतीय भाव-विह्वल है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अपनी जन्मभूमि पर निर्मित भव्य मंदिर के गर्भगृह में बालरूप में विराजमान हो गए हैं।

प्रत्येक भारतीय मन की उस अवस्था में जा पहुंचा है जहां शांति का साम्राज्य है। आज प्रौढ़ हुई पीढ़ी के करोड़ों लोग ऐसे हैं जिन्होंने प्रभु राम के जन्मस्थान पर मंदिर बनाने के संकल्प के साथ प्रारंभ हुए आन्दोलन में प्रत्यक्ष-परोक्ष सहभाग किया है। पुलिस की लाठियां खाई हैं, जेल गए हैं, प्रताड़ना सही है। उनके लिए यह किसी स्वप्न के साकार होने के समान है।

1992 के बाद जन्म लेने वाली पीढ़ी के लिये यह उल्लास किसी स्वप्नलोक जैसा है। एक मंदिर के लिए पूरा देश इस तरह उमड़ रहा है, यह अभूतपूर्व है। वह हैरान हैं कि समाजजीवन के विविध क्षेत्रों से जुड़े ख्यातिलब्ध लोग, जो उसके रोल मॉडल हैं, आइकॉन है, जिनकी जीवनशैली, जिनके आदर्श-व्यवहार बिल्कुल अलग तरह के हैं, क्यों अयोध्या में उमड़े आ रहे हैं। क्यों सरयू की प्रशस्ति गा रहे हैं, क्यों श्रीराम के विग्रह की एक झलक पा लेने के लिए व्यग्र हैं।

समाजशास्त्री विचलित हैं कि दशकों से पढ़ा-लिखा कर तैयार किया प्रगतिशील समाज एक झटके से कैसे पुन: रामधुन गाने लगा। अर्थशास्त्री हतप्रभ हैं कि एक मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा कैसे बाजार में प्राण फूंक सकती है। राजनीतिक दलों के लिए भी यह गुत्थी सुलझाना आसान नहीं है कि जिस समाज को वह समझाते नहीं थकते कि राममन्दिर और संसद के निर्माण में होने वाले हजारों करोड़ रुपए के अपव्यय के चलते मंहगाई बढ़ी है और गरीबों का जीना दूभर हो रहा है, वही समाज मंदिर में रामलला की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा के एक दिन के लिए अपनी जेब से सवा लाख करोड़ रुपए व्यय कर देता है।

यह न हिन्दू-मुस्लिम का प्रश्न है और न भाजपा-कांग्रेस का। प्रश्न है भारतीय मन को भारतीय दृष्टि से समझने का। जिसने इस भारतीय मन की थाह पायी, वह आज शिखर पर है। यह केवल मंदिर का मामला नहीं हैं। भारत की एकता, अखण्डता, उसके जीवनमूल्य, उसकी आस्था और विश्वास को जानने समझने के लिए उसमें रच-बस जाना होता है। जीना होता है उन मूल्यों को। जो ऐसा करने में असफल रहते हैं, वह अंतत: किनारे हो जाते हैं, अप्रासंगिक हो जाते हैं।

भारत में समाज की अपनी कसौटी है जिस पर हर उस व्यक्ति को, विचार को अपने-आप को खरा साबित करना पड़ता है जो नेतृत्व की इच्छा रखता है। समाज सबको अवसर देता है लेकिन उन्हें परखने के उसके अपने तरीके हैं। नेतृत्व को हर परीक्षा के लिए तैयार रहने और अपनी योग्यता सिद्ध करने के लिए बिना धैर्य छोड़े तत्पर रहना होता है। लम्बी रेखा खींचने के इच्छुक जब छोटे रास्ते तलाशते हैं तब एक विद्रूप उत्पन्न होता है। यह विद्रूप ही वर्तमान की प्रत्येक सामाजिक राजनीतिक जटिलता को सघन कर रहा है। अयोध्या में राम आए हैं तो राम राज्य भी आएगा। सत्व जीते और तम हारे, यह रामराज्य का सहज लक्षण है। देश रामराज्य का आह्वान कर रहा है, कर्तव्यानुभूति के साथ।

शुभकामना सहित,
संपादक

पुनः विराजे रामलला

फोटो : प.सं.का.

| संजय दीक्षित |

विक्रम सम्वत 2080, पौष शुक्ल द्वादशी तिथि अर्थात 22 जनवरी 2024 का दिन। यह वह दिन था, जब सरयू तट स्थित प्राचीन नगरी अयोध्या में भगवान श्रीराम की पुनर्स्थापना होनी थी। आयोध्या आह्लादित थी। आनंद, हर्ष, प्रसन्नता के साथ ही आस्था, श्रद्धा एवं विश्वास के बीच आम से लेकर खास, सभी अपने प्रभु श्रीराम के पुनः अयोध्या आगमन को लेकर रोमांचित थे। दिन में बारह बजने के साथ ही देश ही नहीं, पूरे विश्व में हिन्दू जनमानस सब कुछ भुलाकर उन दृश्यों को अपनी आंखों में समेटने के लिए आतुर था, जब प्रभु राम को अपनी जन्मभूमि में विराजना था। जो अयोध्या में थे, वह भी प्रभु राम के विग्रह की प्राणप्रतिष्ठा को देखने के उतना ही उत्सुक थे, जितना देश से लेकर विदेश में बैठे लोग व्याकुल थे। सभी की आंखें टीवी पर या फिर उन बड़ी-बड़ी स्कीनों पर टिक चुकी थी, जो अभिभूत भाव से प्राणप्रतिष्ठा को सजीव रूप से देखने के लिए श्रीरामजन्मभूमि परिसर से लेकर विश्व के अनेक देशों में लगाई गई थीं। अयोध्या में संतों, संन्यासियों, पुजारियों, नागाओं, निहंगों, बुद्धिजीवियों, राजनेताओं, उद्योगपतियों, जनजातियों सहित समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे। प्राणप्रतिष्ठा के लिए वैदिक विधिविधान अनुसार पूजा-पाठ गत 16 जनवरी को दशविधि अनुष्ठान से आरम्भ हुआ। 17 जनवरी को रामलला अपनी जन्मभूमि पर पहुंचे और रजत पालकी पर सवार होकर उन्होंने राजप्रसाद का भ्रमण किया। 18 जनवरी को रामलला के दोनों विग्रह (रजत प्रतिमा एवं श्यामवर्णी अचल प्रतिमा) का जलाधिवास एवं गंधाधिवास, 19 जनवरी को नवग्रह हवन के लिए अरणि मंथन से अग्निदेव का आह्वान, 20 जनवरी को धूमधाम से रामलला की भव्य पालकी निकाली गई तो 21 जनवरी को रामलला ने शीशम के पलंग पर शय्याधिवास किया। फिर आया वह दिन, जिसकी प्रतीक्षा सदियों से की जा रही थी।

प्राणप्रतिष्ठा के लिए ग्यारह दिन से व्रत-उपवास करते आ रहे प्रधानमंत्री मोदी ने सबसे पहले कुबेर टीला स्थित

श्रीराम मंदिर

मुख्य वास्तुकार	: चंद्रकांत बी. सोमपुरा
मूर्तिकार	: अरुण योगीराज (मैसूर) गणेश भट्ट और सत्यनारायण पांडे
मंदिर का क्षेत्रफल	: 2.77 एकड़
मंदिर की लंबाई	: 380 फीट
मंदिर की चौड़ाई	: 250 फीट
मंदिर की ऊंचाई	: 161 फीट
मंदिर में तल	: तीन
मंदिर के प्रत्येक तल की ऊंचाई	: 20 फीट
मंदिर में स्तम्भ	: 392
मंदिर में दरवाजे	: 44
मंदिर निर्माण शैली	: भारतीय नागर शैली
मंदिर संरचना	: भूकंपरोधी
मंदिर संरचना की अनुमानित आयु	: 500 वर्ष
मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार	: पूर्वी दिशा में
मंदिर निर्माण की तकनीक	: पारंपरिक और स्वदेशी

प्राचीन कामेश्वर शिव मंदिर में पूजा-अर्चना की तथा जटायू जी की प्रतिमा पर भी पुष्प अर्पित किए। फिर परम्परागत वेश में वह मंदिर परिसर स्थित गर्भगृह पहुंचे। गर्भगृह में अचल विग्रह के साथ रामलला का वह विग्रह भी था, जिसके दर्शन अस्थायी मंदिर में किए जाते थे। प्रधानमंत्री मोदी अपने साथ चांदी का छत्र लेकर आये थे, जो उन्होंने रामलला को समर्पित किया। प्राणप्रतिष्ठा का पूजन गणपति के पूजन से आरम्भ हुआ। गर्भगृह में विधिपूर्वक प्रभु श्रीराम के बाल रूप विग्रह की प्राणप्रतिष्ठा के समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डा. मोहन भागवत तथा श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के अध्यक्ष महन्त नृत्य गोपालदास उपस्थित थे। पूजन के बाद प्रभु रामलला की आंखों पर बंधी पट्टी को खोला गया और फिर दोपहर 12 बजकर 29 मिनट 8 सेकेंड से लेकर 12 बजकर 30 मिनट 32 सेकेंड की अवधि के दौरान संजीवनी मुहूर्त में प्राणप्रतिष्ठा का मुख्य पूजन संपन्न हुआ। प्राणप्रतिष्ठा और फिर रामलला की आरती के साथ ही पूरा देश हर्ष और उल्लास में डूब गया। सदियों से प्रतीक्षित स्वप्न को साकार होता हुआ देखकर संतोष का भाव चेहरों पर दिखने लगा। सभी भावविह्वल थे क्योंकि प्रभु श्रीराम के रूप में साक्षात भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राणप्रतिष्ठा हो रही थीं। यह साक्षात मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राणप्रतिष्ठा थीं। प्राणप्रतिष्ठा के बाद निर्मोही अखाड़े के स्वामी गोविन्ददेव गिरि ने प्रधानमंत्री मोदी को चरणामृत पिलाकर उनका व्रत समाप्त कराया। 11 दिन के व्रत-अनुष्ठान के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने देश के विभिन्न हिस्सों में पूजा-अर्जना करके एक साधक वाला जीवन व्यतीत किया। इस दौरान उन्होंने पंचवटी धाम (नासिक) त्रिप्रायर मंदिर (केरल), लेपाक्षी मंदिर (आंध्र प्रदेश), रंगनाथ स्वामी मंदिर (श्रीरंगम), श्रीरामनाथस्वामी मंदिर एवं धनुष्कोडि (रामेश्वरम) में पूजा-अर्चना की। श्रीरामजन्मभूमि मंदिर में रामलला विग्रह की प्राणप्रतिष्ठा के बाद बोलती आंखों के साथ दर्शन देने वाले रामलला को देखकर हर किसी की आंखों से आंसू बहने लगे। भावनाएं प्रकट होने लगी। हर कोई झूमने लगा। जय श्रीराम के नारे से आसमान भी हिलने लगा। प्राणप्रतिष्ठा के दिन देश में उत्सव का माहौल रहा और देश-विदेश में स्थित प्रत्येक मंदिर में विशेष पूजा का आयोजन किया गया। रामलला की प्राणप्रतिष्ठा से सभी आनंदित थे तो आसमान से तैतीस कोटि देवी-देवता भी आशीष वर्षा से इस सुयोग को अभिसिंचित कर रहे थे। प्राणप्रतिष्ठा के दौरान अयोध्या में हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा की गई। अयोध्या में उपस्थित विशिष्ट अतिथि भी भावावेश में झूमते हुए दिखाई दिए। यह वह क्षण भी था, जब अयोध्या में नई गाथा लिखी जा रही थी, नया इतिहास रच रहा था और रामराज की कल्पना साकार हो रही थी। संध्याकाल में अयोध्या सहित पूरा देश दीपों की रोशनी से जगमगाने लगा। दीपों की यह जगमगाती हुई रोशनी, एक नए विश्वास और युगपरिवर्तन का स्पष्ट संकेत दे रही थी। ■

भारत के उत्कर्ष का साक्षी बनेगा भव्य राम मंदिर : नरेन्द्र मोदी

सदियों की प्रतीक्षा के बाद हमारे राम आ गए हैं। हमारे रामलला अब टेंट में नहीं रहेंगे। हमारे रामलला अब इस दिव्य मंदिर में रहेंगे। जो घटित हुआ है इसकी अनुभूति, देश के, विश्व के, कोने-कोने में रामभक्तों को हो रही होगी। यह क्षण अलौकिक और पवित्रतम है। 22 जनवरी का सूरज एक अद्भुत आभा लेकर आया है। यह कैलेंडर पर लिखी एक तारीख नहीं, यह एक नए कालचक्र का उद्गम है। आज हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है, आज हमें श्रीराम का मंदिर मिला है। गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से हौसला लेता हुआ राष्ट्र, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है। यह समय, सामान्य समय नहीं है। यह काल के चक्र पर सार्वकालिक स्याही से अंकित हो रहीं अमिट स्मृति रेखाएं हैं।

त्रेता में राम आगमन पर तुलसीदास जी ने लिखा है- प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी। जनित वियोग बिपति सब नासी। अर्थात् प्रभु का आगमन देखकर ही सब अयोध्यावासी, समग्र देशवासी हर्ष से भर गए। लंबे वियोग से जो आपत्ति आई थी, उसका अंत हो गया। उस कालखंड में तो वो वियोग केवल 14 वर्षों का था, तब भी इतना असह्य था। इस युग में तो अयोध्या और देशवासियों ने सैकड़ों वर्षों का वियोग सहा है। भारत के तो संविधान में, उसकी पहली प्रति में, भगवान राम विराजमान हैं। संविधान के अस्तित्व में आने के बाद भी दशकों तक प्रभु श्रीराम के अस्तित्व को लेकर कानूनी लड़ाई चली। आभार व्यक्त करूंगा भारत की न्यायपालिका का, जिसने न्याय की लाज रख ली। न्याय के पर्याय प्रभु राम का मंदिर भी न्यायबद्ध तरीके से ही बना। प्रभु राम तो भारत की आत्मा के कण-कण से जुड़े हुए हैं। राम भारतवासियों के अंतर्मन में विराजे हुए हैं। हम भारत में कहीं भी, किसी की अंतरात्मा को छुएंगे तो इस एकत्व की अनुभूति होगी, और यही भाव सब जगह मिलेगा। इससे उत्कृष्ट, इससे अधिक, देश को समायोजित करने वाला सूत्र और क्या हो सकता है? आज इस ऐतिहासिक समय में देश उन व्यक्तित्वों को भी याद कर रहा है, जिनके कार्यों और समर्पण की वजह से आज हम यह शुभ दिन देख रहे हैं। राम के इस काम में कितने ही लोगों ने त्याग और तपस्या की पराकाष्ठा करके दिखाई है। उन अनगिनत रामभक्तों के, उन अनगिनत कारसेवकों के और उन अनगिनत संत महात्माओं के हम सब ऋणी हैं। आज का अवसर उत्सव का क्षण तो है ही, लेकिन इसके साथ ही यह क्षण भारतीय समाज की परिपक्वता के बोध का क्षण भी है। हमारे लिए यह अवसर सिर्फ विजय का नहीं, विनय का भी है।

दुनिया का इतिहास साक्षी है कि कई राष्ट्र अपने ही इतिहास में उलझ जाते हैं। ऐसे देशों ने जब भी अपने इतिहास की उलझी हुई गांठों को खोलने का प्रयास किया, उन्हें सफलता पाने में बहुत कठिनाई आई। बल्कि कई बार तो पहले से ज्यादा मुश्किल

परिस्थितियां बन गईं। लेकिन हमारे देश ने इतिहास की इस गांठ को जिस गंभीरता और भावुकता के साथ खोला है, वह यह बताती है कि हमारा भविष्य हमारे अतीत से बहुत सुंदर होने जा रहा है। रामलला के इस मंदिर का निर्माण, भारतीय समाज के शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का भी प्रतीक है। आज जिस तरह राममंदिर प्राणप्रतिष्ठा के इस आयोजन से पूरा विश्व जुड़ा हुआ है, उसमें राम की सर्वव्यापकता के दर्शन हो रहे हैं। रामलला की यह प्रतिष्ठा 'वसुधैव कुटुंबकम्' के विचार की भी प्रतिष्ठा है।

आज अयोध्या में, केवल श्रीराम के विग्रह रूप की प्राणप्रतिष्ठा नहीं हुई है। यह श्रीराम के रूप में साक्षात भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राणप्रतिष्ठा है। यह साक्षात मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राणप्रतिष्ठा है। इन मूल्यों की, इन आदर्शों की आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' यह संकल्प हम सदियों से दोहराते आए हैं। आज उसी संकल्प को राममंदिर के रूप में साक्षात आकार मिला है। यह मंदिर, मात्र एक देव मंदिर नहीं है। यह भारत की दृष्टि का, भारत के दर्शन का, भारत के दिग्दर्शन का मंदिर है। यह राम के रूप में राष्ट्र चेतना का मंदिर है। राम भारत की आस्था हैं, राम भारत का आधार हैं। राम भारत का विचार हैं, राम भारत का विधान हैं। राम भारत की चेतना हैं, राम भारत का चिंतन हैं। इसलिए, जब राम की प्रतिष्ठा होती है, तो उसका प्रभाव वर्षों या शताब्दियों तक ही नहीं होता। उसका प्रभाव हजारों वर्षों के लिए होता है। महर्षि वाल्मीकि ने कहा है- राज्यम् दश सहस्राणि प्राप्य वर्षाणि राघवः। अर्थात, राम दस हजार वर्षों के लिए राज्य पर प्रतिष्ठित हुए। यानी हजारों वर्षों के लिए रामराज्य स्थापित हुआ। जब त्रेता में राम आए थे, तब हजारों वर्षों के लिए रामराज्य की स्थापना हुई थी। हजारों वर्षों तक राम विश्व पथप्रदर्शन करते रहे थे। आज मैं पूरे पवित्र मन से महसूस कर रहा हूं कि कालचक्र बदल रहा है। यह सुखद संयोग है कि हमारी पीढ़ी को एक कालजयी पथ के शिल्पकार के रूप में चुना गया है। हज़ार वर्ष बाद की पीढ़ी, राष्ट्र निर्माण के हमारे आज के कार्यों को याद करेगी। यही समय है, इस पवित्र समय से, अगले एक हजार साल के भारत की नींव रखनी है। मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर अब हम सभी देशवासी, यहीं इस पल से समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत के निर्माण की सौगंध लेते हैं। राम के विचार, 'मानस के साथ ही जनमानस' में भी हों, यही राष्ट्र निर्माण की सीढ़ी है। प्रत्येक भारतीय में अपनत्व की, बंधुत्व की यह भावना, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगी। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार! रामकाज से राष्ट्रकाज, समय का पल-पल, शरीर का कण-कण, राम समर्पण को राष्ट्र समर्पण के ध्येय से जोड़ देंगे।

यह भारत के विकास का अमृतकाल है। आज भारत युवा शक्ति की पूंजी से भरा हुआ है, ऊर्जा से भरा हुआ है। ऐसी सकारात्मक परिस्थितियां, फिर ना जाने कितने समय बाद बनेंगी। हमें अब चूकना नहीं है, बैठना नहीं है। मैं अपने देश के युवाओं से कहूंगा। आपके सामने हजारों वर्षों की परंपरा की प्रेरणा है। अपनी विरासत पर गर्व करते हुए आपको भारत का नव प्रभात लिखना है। परंपरा की पवित्रता और आधुनिकता की अनंतता, दोनों ही पथ पर चलते हुए भारत, समृद्धि के लक्ष्य तक पहुंचेगा। आने वाला समय अब सिद्धि का है। यह भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भारत के उत्कर्ष का, भारत के उदय का, यह भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- 'भव्य भारत के अभ्युदय का, विकसित भारत का' ! यह मंदिर सिखाता है कि अगर लक्ष्य, सत्य प्रमाणित हो, अगर लक्ष्य, सामूहिकता और संगठित शक्ति से जन्मा हो, तब उस लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं है। हम रुकेंगे नहीं। हम विकास की ऊंचाई पर जाकर ही रहेंगे। इसी भाव के साथ रामलला के चरणों में प्रणाम करते हुए आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं। सभी संतों के चरणों में मेरे प्रणाम। ■

(22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में श्रीरामलला प्राणप्रतिष्ठा के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उद्बोधन के प्रमुख अंश)

अयोध्या में भारत का 'स्व' लौटकर आया: डा. मोहन भागवत

आज का आंनद शब्दों में वर्णनातीत है। आज अयोध्या में रामलला के साथ भारत का 'स्व' लौटकर आया है। संपूर्ण विश्व को त्रासदी से राहत देने वाला एक नया भारत खड़ा होकर रहेगा, इसका प्रतीक आज का कार्यक्रम बन गया है। ऐसे समय में आपके उत्साह और आनंद का वर्णन कोई नहीं कर सकता। पूरे देश में यही वातावरण है। छोटे-छोटे मंदिरों के सामने दूरदर्शन पर इस कार्यक्रम को देखने-सुनने वाले हमारे समाज के करोड़ों बंधु, जो यहां पहुंच नहीं पाए ऐसे घर-घर के हमारे नागरिक-सज्जन, माता-भगिनी सब भाव-विभोर हैं। सबमें आनंद है, सबमें उत्साह है।

प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव में पधारने से पूर्व प्रधानमंत्री जी ने कठोर व्रत रखा। जितना कठोर व्रत रखने को कहा था, उससे कई गुणा अधिक कठोर व्रताचरण उन्होंने किया। मैं जानता हूं वह तपस्वी हैं ही। परंतु वह अकेले तप कर रहे हैं तो हम क्या करेंगे? अयोध्या में रामलला आए। अयोध्या से बाहर वह क्यों गए थे? अयोध्या में कलह हुआ था! अयोध्या उस पुरी का नाम है, जिसमें कोई द्वंद्व नहीं, जिसमें कोई कलह नहीं, जिसमें कोई दुविधा नहीं। परंतु वह हुआ और राम 14 वर्ष के लिए वनवास में गए। सब ठीक होने के बाद दुनिया के कलह को मिटाकर वह वापस अयोध्या आए। आज रामलला फिर से पांच सौ साल के बाद वापस आए हैं। जिनके त्याग, तपस्या, प्रयासों से आज हम यह स्वर्ण दिवस देख रहे हैं, उनका स्मरण प्राणप्रतिष्ठा के संकल्प में हम लोगों ने किया। उनकी तपस्या को, उनके त्याग को, उनके परिश्रम को शत बार, सहस्त्र बार, कोटि बार नमन है। आज के दिन इस युग में रामलला के यहां फिर वापस आने का इतिहास जो-जो श्रवण करेगा, वह राष्ट्र के लिए कर्म प्रवण होगा और उसके राष्ट्र का सब दुख-दैन्य हरण होगा। ऐसा इस इतिहास का सामर्थ्य है। परंतु उसमें हमारे लिए कर्तव्य का आदेश भी है। रामराज्य आने वाला है। वह कैसा था –

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥

यह रामराज्य के सामान्य नागरिकों का वर्णन है। हम भी इस गौरवमय भारतवर्ष की संतानें हैं। हमको इस प्रकार के व्यवहार को रखने का तप आचरण करना पड़ेगा। हमको भी सारे कलह को विदाई देनी पड़ेगी। छोटे-छोटे परस्पर मत रहते हैं, छोटे-छोटे विवाद रहते हैं, उनको लेकर लड़ाई करने की आदत छोड़ देनी पड़ेगी। रामराज्य में आखिर सामान्य नागरिक कैसे थे? निर्दंभ, प्रामाणिकता से आचरण करने वाले, केवल बातें करने वाले नहीं, बातें करके उसका अहंकार पालने वाले नहीं थे, काम करते थे, आचरण करते थे। उनमें अहंकार नहीं था।

धर्म के चार मूल्य श्रीमद्भागवत में बताए गए हैं। वह चार मूल्य हैं सत्य, करुणा, शुचिता, तपस। उनका आज हमारे लिए युगानुकूल आचरण क्या है? सत्य

कहता है कि सब घट में राम हैं। ब्रह्म सत्य है। वही सर्वत्र है। यह जानकर आपस में समन्वय से चलना होगा क्योंकि हम चलते हैं तो सबके लिए चलते हैं। सब हमारे हैं। इसलिए हम चल पाते हैं। इसलिए आपस में समन्वय रखकर व्यवहार करना धर्म के पहले पैर यानी सत्य का आचरण है। करुणा दूसरा कदम है। उसका आचरण है सेवा और परोपकार। सरकार की कई योजनाएं गरीबों को राहत दे रही हैं। सब हो रहा है। लेकिन हमारा भी कर्तव्य है। यह सब समाज बांधव हमारे अपने बंधु हैं। जहां हमको दुख दिखता है, पीड़ा दिखती है वहां हम दौड़ जाएं, सेवा करें। दोनों हाथों से कमाएं। अपने लिए न्यूनतम आवश्यक रखकर बाकी सारा सेवा और परोपकार के माध्यम से वापस दें। यह आज करुणा का अर्थ है।

शुचिता पर चलना है यानी पवित्रता होनी चाहिए। पवित्रता के लिए संयम चाहिए। अपने को रोकना है। सब अपनी इच्छाएं, अपने मत, अपनी बातें ठीक होंगी ही ऐसा नहीं। होंगी तो भी अन्यों के भी मत हैं, अन्यों की भी इच्छाएं हैं। इसलिए अपने आप को संयम में रखते हैं तो सारी पृथ्वी सब मानवों को जीवित रखेगी। गांधी जी कहते थे-Earth has enough for everyone's need, but It cannot satisfy everyone's greed। इसलिए लोभ नहीं करना, संयम में रहना और अनुशासन का पालन करना। अपने जीवन में अनुशासित रहना, अपने कुटुंब में अनुशासन रखना, अपने समाज में अनुशासन रखना और सामाजिक जीवन में नागरिक अनुशासन का पालन करना।

भगिनी निवेदिता कहती थी कि स्वतंत्र देश में नागरिक संवेदना रखना और नागरिक अनुशासन का पालन करना ही देशभक्ति का रूप है। इससे जीवन में पवित्रता आती है। तपस का तो मूर्तिमान उदाहरण आपके सामने आज दिया गया। व्यक्तिगत तपस तो हम करेंगे, पर सामूहिक तपस भी ध्यान में रखें। सामूहिक तपस है- "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।' हम साथ चलेंगे, आपस में बोलेंगे और उसमें से सहमति का संवाद निकालेंगे। एक ही भाषा बोलेंगे। वो वाणी, मन, कर्म, वचन समन्वित होगा और मिलकर चलेंगे। अपने देश को विश्वगुरु बनाएंगे। यह तपस हम सबको करना है।

500 वर्षों तक अनेक पीढ़ियों ने लगकर, परिश्रम करके, प्राणों का बलिदान देकर, खून-पसीना बहाकर आज यह आनंद का दिन सारे राष्ट्र को उपलब्ध कराया है। उन सबके प्रति हमारे मन में कृतज्ञता है। विश्व में जिस धर्म स्थापना के लिए राम का अवतार हुआ था, उस धर्म स्थापना के लिए अपने आचरण में, अपने देश में अनुकूल स्थिति उत्पन्न करना अपना कर्तव्य बनता है। रामलला हमारे मन को आह्लादित करने, उत्साहित करने और प्रेरणा देने के लिए आए हैं। साथ ही इस कर्तव्य की याद दिलाकर उसमें कृति प्रवण करने के लिए आए हैं। उनका आदेश सिर पर लेकर हम यहां से जाएं। सब लोग तो यहां आ नहीं सके, लेकिन वह सुन रहे हैं, देख रहे हैं। अभी इसी क्षण से इस व्रत का पालन हम करेंगे तो मंदिर निर्माण पूरे होते-होते, विश्वगुरु भारत का निर्माण भी पूरा हो जाएगा। ■

(22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में श्रीरामलला प्राणप्रतिष्ठा के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डा. मोहन भागवत के उद्बोधन के प्रमुख अंश)

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' फरवरी 2024 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

मंदिर वहीं बना, जहां बनाने के लिए संकल्प लिया : योगी आदित्यनाथ

500 वर्षों के लम्बे अंतराल के उपरान्त आज के इस चिरप्रतीक्षित मौके पर अंतर्मन में भावनाएं कुछ ऐसी हैं कि उन्हें व्यक्त करने को शब्द नहीं मिल रहे। मन भावुक, भाव-विभोर तथा भाव विह्वल है। इस ऐतिहासिक और अत्यंत पावन अवसर पर भारत का हर नगर, हर ग्राम अयोध्या धाम है। पूरा राष्ट्र राममय है। ऐसा लगता है कि हम त्रेतायुग में आ गए हैं। रघुनन्दन राघव रामलला, हमारे हृदय के भावों से भरे संकल्प स्वरूप सिंहासन पर विराज रहे हैं। भारत को इसी दिन की तो प्रतीक्षा थी। भाव-विभोर कर देने वाले इस दिन की प्रतीक्षा में लगभग पांच शताब्दियां व्यतीत हो गईं। दर्जनों पीढ़ियां अधूरी कामना लिए इस धराधाम से साकेतधाम में लीन हो गईं, किन्तु प्रतीक्षा और संघर्ष का क्रम सतत जारी रहा। श्रीरामजन्मभूमि, संभवतः विश्व में पहला ऐसा अनूठा प्रकरण होगा, जिसमें किसी राष्ट्र के बहुसंख्यक समाज ने अपने ही देश में अपने आराध्य की जन्मस्थली पर मंदिर निर्माण के लिए इतने वर्षों तक और इतने स्तरों पर लड़ाई लड़ी हो।

संतों, संन्यासियों, पुजारियों, नागाओं, निहंगों, बुद्धिजीवियों, राजनेताओं, जनजातियों सहित समाज के हर वर्ग ने जात-पात, विचार-दर्शन, उपासना पद्धति से ऊपर उठकर रामकाज के लिए स्वयं का उत्सर्ग किया। अंततः वह शुभ अवसर आ गया कि जब कोटि-कोटि आस्थावानों के त्याग और तप को पूर्णता प्राप्त हो रही है। आत्मा प्रफुल्लित है, इस बात से कि मंदिर वहीं बना है, जहां बनाने का संकल्प लिया था। संकल्प और साधना की सिद्धि के लिए, प्रतीक्षा की समाप्ति के लिए और संकल्प की पूर्णता के लिए गर्भगृह में वैदिक विधि-विधान से श्रीरामलला के बाल विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के हम सभी साक्षी बने। विचारों और भावनाओं की विह्वलता के बीच उन्हें पूज्य संतों और अपनी गुरु परम्परा का पुण्य स्मरण हो रहा है। आज उनकी आत्मा को असीम संतोष और आनन्द की अनुभूति हो रही होगी। जिन परम्पराओं की पीढ़ियां श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ में अपनी आहुति दे चुकी हैं, उनकी पावन स्मृतियों को कोटि-कोटि नमन। श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति महायज्ञ न केवल सनातन आस्था एवं विश्वास की परीक्षा

का काल रहा, बल्कि सम्पूर्ण भारत को एकात्मता के सूत्र में बांधने के लिए राष्ट्र की सामूहिक चेतना जागरण के ध्येय में भी सफल सिद्ध हुआ। सदियों के बाद भारत में हो रहे इस चिर-प्रतीक्षित नवविहान को देख अयोध्या सहित भारत का वर्तमान आनन्दित हो उठा है। हमारी पीढ़ी भाग्यवान है, जो इस राम-काज की साक्षी बन रही है और उससे भी बड़भागी हैं वह, जिन्होंने सर्वस्व इस राम-काज के लिए समर्पित किया है और करते चले जा रहे हैं। जिस अयोध्या को 'अवनि की अमरावती' और 'धरती का वैकुण्ठ' कहा गया, वह सदियों तक अभिशप्त रही, उपेक्षित रही, सुनियोजित तिरस्कार झेलती रही। अपनी ही भूमि पर सनातन आस्था पददलित होती रही, चोटिल होती रही। किंतु राम का जीवन हमें संयम की शिक्षा देता है और भारतीय समाज ने संयम बनाए रखा। लेकिन हर एक दिन के साथ हमारा संकल्प और दृढ़ होता गया और आज पूरी दुनिया अयोध्या जी के वैभव को निहार रही है।

अयोध्या में त्रेतायुगीन वैभव उतर आया है, दिख रहा है। यह धर्म नगरी 'विश्व की सांस्कृतिक राजधानी' के रूप में प्रतिष्ठित हो रही है। पूरा विश्व दिव्य और भव्य अयोध्या का साक्षात्कार कर रहा है। आज जिस सुनियोजित एवं तीव्र गति से अयोध्यापुरी का विकास हो रहा है, कुछ वर्षों पहले तक यह कल्पना से परे था। नई अयोध्या में पुरातन संस्कृति और

सभ्यता का संरक्षण तो हो ही रहा है, भविष्य की जरूरतों को देखते हुए आधुनिक पैमाने के अनुसार सभी नगरीय सुविधाएं भी विकसित हो रहीं हैं। पूरी अयोध्या विश्व के सनातन आस्थावानों, संतों, पर्यटकों, शोधार्थियों, जिज्ञासुओं के लिए प्रमुख केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। यह एक नगर या तीर्थ भर का विकास नहीं है, यह उस विश्वास की विजय है, जिसे 'सत्यमेव जयते' के रूप में भारत के राजचिह्न में अंगीकार किया गया है। यह लोकआस्था- जन विश्वास की विजय है। भारत के गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा है। अयोध्या का दिव्य दीपोत्सव नए भारत की सांस्कृतिक पहचान बन रहा है और श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का समारोह भारत की सांस्कृतिक अन्तरात्मा को अभिव्यक्त कर रहा है। श्रीरामजन्मभूमि मंदिर की स्थापना भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आध्यात्मिक अनुष्ठान है, यह राष्ट्र मंदिर है। निःसन्देह! श्रीरामलला विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा राष्ट्रीय गौरव का ऐतिहासिक अवसर है। प्रभु राम कृपा से अब कोई अयोध्या की परिक्रमा में बाधा नहीं बन पाएगा। अयोध्या की गलियों में अब गोलियां नहीं चलेगी, कर्फ्यू नहीं लगेगा। अपितु दीपोत्सव, रामोत्सव और श्रीराम नाम संकीर्तन से यहां की गलियां गुंजायमान होंगी। अवधपुरी में रामलला का विराजना, रामराज्य की स्थापना की उद्घोषणा है। रामराज्य, भेदभाव रहित समरस समाज का द्योतक है। ■

(22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में श्रीरामलला प्राणप्रतिष्ठा के अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के उद्बोधन के प्रमुख अंश)

रामरस में डूबी अभाविप

श्रीराममंदिर प्राणप्रतिष्ठा के अवसर पर दिल्ली में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने विभिन्न स्थानों पर दीप प्रज्ज्वलन, भजन, हनुमान चालीसा पाठ, भंडारा आदि का आयोजन किया। इन आयोजनों में दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), जामिया मिल्लिया इस्लामिया के छात्रों सहित बड़ी संख्या में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्र भी शामिल हुए।

प्राणप्रतिष्ठा वाले दिन सुबह से ही दिल्ली विश्वविद्यालय के अलग-अलग स्थानों पर श्रीराममंदिर प्राणप्रतिष्ठा को लेकर उल्लास की अद्भुत छटा बिखरी हुई थी। डीयू के छात्रा मार्ग पर विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन से लेकर हंसराज कालेज तक रंगीन गुब्बारों से विश्वविद्यालय को सजाया गया। कला संकाय पर एलईडी स्क्रीन के माध्यम से छात्र प्राणप्रतिष्ठा के गवाह बने।

शाम को दिल्ली विश्वविद्यालय में अभाविप नीत डूसू ने पूरे विश्वविद्यालय में ढाई लाख दीयों का प्रज्ज्वलन किया। दीप प्रज्ज्वलन के कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र भागी बने। पूरा दिन दिल्ली के शैक्षणिक परिसर राममय वातावरण से भरपूर दिखे, वहीं छात्र-छात्राएं भी उत्साहित होकर हर्ष में डूबे रहे। आयोजित किए गए कार्यक्रमों में अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री शिवांगी खरवाल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान, राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत, दिल्ली प्रदेश मंत्री हर्ष अत्री, दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष तुषार डेढ़ा, डूसू सचिव अपराजिता तथा डूसू सह-सचिव सचिन बैसला सहित अन्य कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

अभाविप नोएडा इकाई ने सावित्रीबाई फुले महाविद्यालय में रामोत्सव का आयोजन किया। आयोजन में अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री गोविंद नायक, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के कुलसचिव विश्वास त्रिपाठी, प्रधानाचार्य प्रीति फोगाट, प्रांत सह मंत्री गौरव गौड़ और नगर मंत्री वैभव मिश्रा सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। रामोत्सव आयोजन में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भजन एवं नृत्य के माध्यम से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की सांस्कृतिक विरासत की झलक दिखाई। गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय परिसर में एक झांकी निकाल कर प्रसाद वितरण भी किया गया।

आयोजन में राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री गोविंद नायक ने प्रभु श्रीराम के जीवन चरित्र को सभी के सामने रखा। उन्होंने कहा कि हमें त्याग, समर्पण और बंधुत्व का भाव प्रभु श्रीराम के जीवन चरित्र से सीखना होगा। उन्होंने कहा कि हमें नैतिक और अनैतिक कार्यों में विभेद करना होगा और नैतिक मूल्यों को सर्वोपरि रखकर जीवन में कार्य करना चाहिए। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

सदियों के संघर्ष की साक्षी अयोध्या

उत्तर प्रदेश स्थित अयोध्या नगरी, वह पवित्र स्थान है, जहां प्रभु रामचन्द्रजी का जन्म हुआ। जन-जन के भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि, सूर्यवंश के प्रतापी राजाओं की राजधानी, मोक्षदायिनी सप्तपुरियों में से एक, जैन मत के पांच तीर्थंकरों का जन्म भी इस पुण्यनगरी में हुआ, भगवान् बुद्ध ने जहां वर्षों तप किया, सिख मत के प्रवर्तक गुरु नानकदेव, नवम गुरु श्रीतेगबहादुर और दशमेश गुरु गोविंद सिंह जहां स्वयं पधारे। प्राचीन भारत का इतिहास सरयू-तट पर बसी इस नगरी की गाथा गाता है। दुनिया भर के इतिहासकारों, विदेश यात्रियों ने अपनी रचनाओं में अयोध्या का वर्णन किया है। सभी विश्व-प्रसिद्ध प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित विभिन्न कालखण्डों के नक्शों में अयोध्या (भारत के मानचित्र में) को प्रमुखता के साथ दर्शाया गया है।

भारत की वैदिक हिन्दू सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान की केंद्रभूमि अयोध्या पर विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं की कुदृष्टि मध्य काल में पड़ी। 1526 में फरगाना के क्रूर शासक बाबर ने भारत पर आक्रमण किया। रास्ते भर में सैकड़ों नगरों को लूटता, हजारों गांवों को जलाता और लाखों लोगों की हत्या करता हुआ, वह 1528 में अयोध्या के निकट पहुंचा। बाबर के आदेश पर उसके सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या पर आक्रमण किया। इतिहासकार कनिंघम के अनुसार पंद्रह दिन तक हुए घमासान युद्ध में 1 लाख 74 हजार हिन्दुओं ने वीरगति प्राप्त की, उसके बाद ही मीर बाकी जन्मभूमि पर बने भगवान श्रीराम के वैभवपूर्ण मंदिर को तोप के गोलों से गिरा पाया। श्रीरामजन्मभूमि मंदिर के मलबे से उस स्थान पर दरवेश मूसा आशिकान के निर्देश पर उसने मस्जिद जैसा एक ढांचा खड़ा कर दिया। धार्मिक मदांधता एवं हिन्दू समाज को नष्ट करने की कट्टर मानसिकता के कारण श्रीरामजन्मभूमि पर इस भवन को बनाया गया था, पर यहां कभी नमाज नहीं हुई।

भारत की मूल हिन्दू संस्कृति की श्रद्धा, आस्था और विश्वास के केंद्रबिंदु के रूप में विख्यात श्रीरामजन्मभूमि पर स्थित मंदिर का विध्वंस हिन्दू समाज के लिए असहनीय वेदना का कारण बन गया। इसने श्रीरामजन्मभूमि की मुक्ति के लिए संघर्ष की एक विरामहीन शृंखला को जन्म दिया। 1528 से 1949 तक की कालावधि में जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए 76 युद्ध हुए, जिनमें लाखों राम-भक्तों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। इनमें बाबर के काल में चार, हुमायूँ के काल में दस, अकबर के काल में बीस, औरंगजेब के काल में तीस, अवध के नवाब सयादत अली के काल में पांच और नवाब नासिरुद्दीन हैदर के काल में तीन बार भीषण संघर्ष हुआ।

अयोध्या में मंदिर स्थल पर अधिकार प्राप्त करने के लिए बाबा उद्धवदास और भाटी नरेश द्वारा किए गए दो युद्धों के बाद नवाब ने विवाद के निपटारे के लिए तीन सदस्यीय समिति बनाई, जिसमें एक हिन्दू, एक मुसलमान और ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रतिनिधिरूप में एक तटस्थ अंग्रेज को रखा गया। समिति ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से बताया कि मीर बाकी ने किसी भवन को तोड़कर इसे बनाया है क्योंकि इस पर लिखा है कि यह फरिश्तों के उतरने की जगह है। इसमें भवन का मलबा भी लगा है।

1857 के स्वातन्त्र्य समर में अयोध्या के राजा देवीबख्श सिंह और महन्त रामचरण दास ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का झंडा बुलंद किया। इस अवसर पर वहां के मुस्लिम नेता अमीर अली ने मुसलमानों से कहा कि 'बिरादराने वतन! मुल्क की आजादी को कायम रखने, बेगमों के जेवरात बचाने और हमारे जान-माल को बचाने में हिन्दू भाइयों ने अंग्रेजों से लड़कर जिस कदर बहादुरी दिखाई है, उसे हम भूल नही सकते। इसलिए फर्जे इलाही हमें मजबूर करता है कि हिन्दुओं के खुदा रामचन्द्रजी की पैदाइशी जगह पर जो बाबरी मस्जिद (कथित रूप से) बनी, वह हम हिन्दुओं को बखुशी सुपुर्द कर दें क्योंकि हिन्दू-मुस्लिम नाइत्तफाकी की सबसे बड़ी जड़ यही है और ऐसा करके हम हिन्दुओं के दिल पर फतह पा जाएंगे।'

तत्कालीन स्थितियों में हिन्दू-मुस्लिम समुदायों के बीच उपजा यह बंधुत्व अंग्रेजों को जरा भी न भाया। सुल्तानपुर गजेटियर में कर्नल मार्टिन ने लिखा कि अयोध्या की बाबरी ढांचे को हिन्दुओं को वापस देने की खबर से हम (अंग्रेजों) में घबराहट फैल गई और लगने लगा कि हिन्दुस्तान से अंग्रेज खत्म हो जाएंगे। परिणामस्वरूप, जैसे ही अवध पर अंग्रेजों का कब्जा हुआ, हिन्दू-मुस्लिम बंधुत्व के इस प्रयास को कुचल दिया गया। इसके सूत्रधार महंत रामचरण दास और अमीर अली को कुबेर टीला स्थित इमली के एक पेड़ पर फांसी पर लटका दिया गया। अंग्रेजों की कुटिल योजनाओं ने श्रीरामजन्म भूमि परिसर को एक घेरे में कैद कर दिया। साथ ही हिन्दू और मुस्लिम समाज के मध्य जारी विवाद की आग में घी डालने का काम किया। यह सिलसिला कई दशकों तक जारी रहा।

22 दिसम्बर 1949 की रात को एक चमत्कार घटित हुआ। तत्कालीन समय में श्रीरामजन्मभूमि पर सुरक्षा के लिए तैनात एक सिपाही ने बताया कि अचानक एक दिव्य प्रकाश से उसकी आंखें चौंधिया गई और जब उसे भान हुआ तो उसने देखा कि बाल रूप में प्रभु श्रीराम उस भवन के भीतर विराजमान हैं। मूर्ति प्रकट होने के बाद उसके दर्शन के लिए लाखों की संख्या में हिन्दू श्रद्धालु वहां श्रद्धा-भाव से पहुंचने लगे। ढांचे के बाहर स्थित राम चबूतरे पर अखण्ड कीर्तन प्रारंभ हो गया जो 6 दिसबंर 1992 तक निरंतर चलता रहा। विवादित ढांचा ढहा दिए जाने के बाद उस स्थान को सरकार ने कब्जे में ले लिया। इसी वजह से कीर्तन का स्थान बदल दिया गया, किन्तु वह अखण्ड रूप से जारी रहा। भगवान रामलला के प्राकट्य की घटना पर मुस्लिम समाज की ओर से कोई विरोध अथवा शिकायत दर्ज नहीं कराई गई।

भगवान के प्राकट्य के बाद अयोध्या-फैजाबाद के अतिरिक्त सिटी मजिस्ट्रेट (प्रथम श्रेणी) मार्कन्डेय सिंह ने स्वयं प्रेरणा से भीतर आंगन वाले परिसर को 29 दिसम्बर 1949 को जारी अपने आदेश द्वारा अपराध प्रक्रिया संहिता की धारा-145 के अन्तर्गत कुर्क कर लिया। परन्तु अपने आदेश में किसी हिन्दु या मुसलमान का नामोल्लेख नहीं किया। अपितु लिखा कि अयोध्या के मोहल्ला रामकोट में बाबरी मस्जिद रामजन्मभूमि में पूजा तथा मालिकाना हक पर विवाद है। यह विषय अत्यन्त नाजुक और गम्भीर है। अतः मैं विवाद के निपटारे तक इस भवन के कुर्की का आदेश देता हूं और आदेश दिया जाता है कि सभी सम्बन्धित पक्ष भवन के अधिकार के सम्बन्ध में अपने लिखित वक्तव्य दें। इसके साथ ही भीतरी आंगन में स्थित तीन गुम्बदों वाले ढांचे को नगर मजिस्ट्रेट ने नगरपालिका अध्यक्ष प्रियदत्त राम के अधिकार में सौंपकर उन्हें रिसीवर घोषित कर दिया। यह भी आदेश दिया कि रिसीवर महोदय इस सम्पत्ति के प्रबन्ध की व्यवस्था की योजना प्रस्तुत करेंगे। रिसीवर बाबू प्रियदत्त राम ने बीच वाले गुम्बद के नीचे रखे भगवान रामलला की पूजा-अर्चना तथा प्रबन्ध व्यवस्था की लिखित योजना प्रस्तुत की, जो स्वीकार कर ली गई। इस प्रकार भगवान की पूजा-अर्चना निर्बाध प्रारम्भ हो गई।

23 दिसम्बर 1949 की प्रातः काल से ही भक्तगण दरवाजे के बाहर कीर्तन करने बैठ गए, जो 6 दिसम्बर 1992 तक रात-दिन अखंड रूप से चलता रहा। तत्कालीन जिलाधिकारी कृष्ण कुमार नैयर ने उस क्षेत्र को विवादित घोषित कर निषेधाज्ञा लागू कर दी। ढांचे के मुख्य द्वार को लोहे की सरियों से बंद कर ताला डाल दिया गया और एक छोटे द्वार से भगवान श्रीराम की पूजा-अर्चना और भोग आदि के लिए केवल चार पुजारियों और एक भंडारी को प्रवेश की अनुमति दी गई। साथ ही किसी भी प्रकार का संघर्ष टालने के लिए उस स्थान से 500 गज की परिधि में मुसलमानों का प्रवेश वर्जित कर दिया। इसके बाद से लोहे की सरियों में कैद श्रीराम जन्मभूमि को 2019 तक क़ानूनी दांव-पेंचों का सामना करना पड़ा। इस दौरान भगवान श्रीराम को काल्पनिक बताया गया और हिन्दू आस्था को मिथक सिद्ध करने के लिए हिन्दू विरोधी सामाजिक-राजनीतिक संगठनों ने एकजुट होकर मनगढंत, झूठे एवं भामक तथ्यों सहित कई दावे किए, जिसमें वामपंथी विचारधारा वाले इतिहासकारों की कुटिल भूमिका रही। तमाम दांव-पेंचों के बाद अंततः अयोध्या स्थित जन्मभूमि पर भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर निर्माण का रास्ता प्रशस्त हुआ। ■

मंदिर आन्दोलन : मील के पत्थर

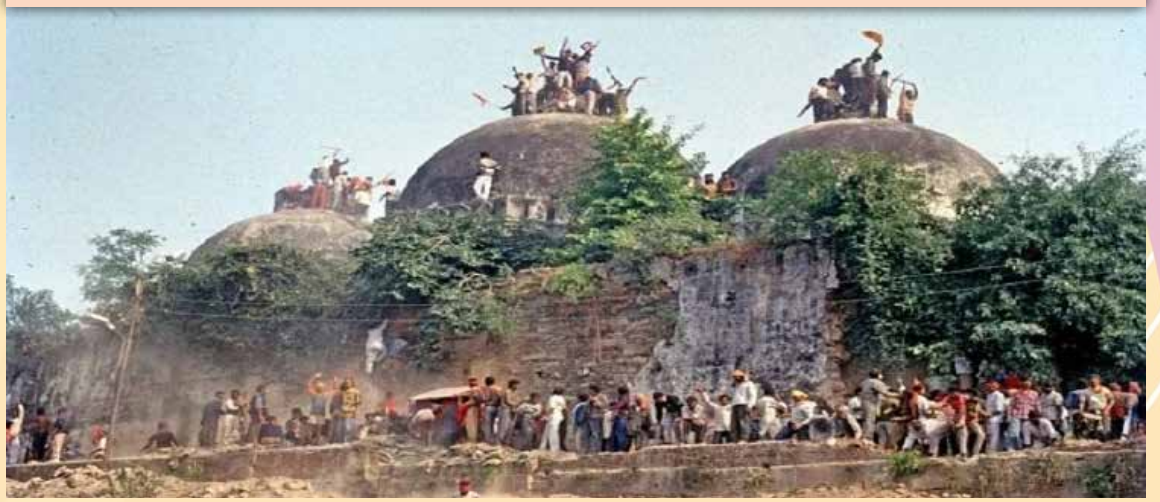

अयोध्या स्थित श्रीरामजन्मभूमि पर रामलला के प्रकट होने और फिर तत्कालीन प्रशासन द्वारा मंदिर क्षेत्र को विवादित घोषित करके ताला में बंद कर दिया। एक छोटे द्वार से भगवान श्रीराम की पूजा-अर्चना की अनुमति दी गई। प्रशासन के निर्णय के विरोध में जनवरी 1950 में एक श्रद्धालु ने जिला न्यायालय (फैजाबाद) में वाद दाखिल करके भगवान रामलला के नित्य दर्शन तथा पूजन में बाधा न डालने के साथ ही रामलला की सुरक्षा सुनिश्चित करने की प्रार्थना की। एक अन्य श्रद्धालु ने भी इसी तरह का वाद दाखिल किया। दोनों ही मामलों में निर्णय श्रद्धालुओं के पक्ष में गया। उच्च न्यायालय द्वारा इसका अनुमोदन भी कर दिया गया। बाद में इस पर रिसीवर की नियुक्ति कर दी गई। कानूनी लड़ाई जारी रही, जिसने हिन्दू समाज को इस तरह उद्वेलित किया कि पुनः जन्मभूमि हासिल करने की इच्छाशक्ति बढ़ती ही चली गई। न्यायिक प्रक्रिया के कारण दशकों तक इंतजार करना पड़ा।

हिन्दू सम्मेलन

1983 में उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में हिन्दू जागरण मंच के तत्वावधान में एक विराट हिन्दू सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में भाग लेने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री दाऊदयाल खन्ना, जो मुरादाबाद से पांच बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विधायक रह चुके थे, ने श्रीरामजन्मभूमि (अयोध्या), श्रीकृष्णजन्मभूमि (मथुरा) तथा वाराणसी स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर पर बनी मस्जिदों को हिन्दू स्वाभिमान के लिए चुनौती बताते हुए उनकी मुक्ति का प्रयास करने की मार्मिक अपील की। वहां पर उपस्थित हिन्दू समाज ही नहीं अपितु, आयोजकों को भी इन तथ्यों की जानकारी नहीं थी। श्री खन्ना की अपील का गहरा असर हुआ और सम्मेलन में ही तीनों मन्दिरों की मुक्ति का प्रस्ताव पहली बार पारित हुआ।

प्रथम धर्म संसद

हिन्दू सम्मेलन के माध्यम से सामने आए तथ्यों एवं जानकारी के आधार पर विश्व हिन्दू परिषद का एक प्रतिनिधि मण्डल श्री अशोक सिंहल के नेतृत्व में तीनों स्थानों के तथ्यान्वेषण के लिए गया। मुजफ्फरनगर में पारित प्रस्तावों पर देश के शीर्षस्थ संतों-महंतों से परामर्श कर अप्रैल, 1984 में दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसे धर्म-संसद नाम दिया गया। यहां पुनः

उक्त तीनों प्रस्ताव पारित हुए। धर्म-संसद में ही श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन किया गया। समिति के तत्वावधान में जन्मभूमि पर लगे ताले को खुलवाने की मांग के साथ ही बिहार स्थित सीतामढ़ी से श्रीराम-जानकी रथयात्रा प्रारंभ करने तथा देशभर में हिन्दू जनजागरण करने का भी निर्णय किया गया। श्री राम-जानकी रथों के माध्यम से व्यापक जन-जागरण हुआ। किन्तु रथ दिल्ली पहुंच पाते, इससे पूर्व ही प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या हो गई। इसके साथ ही राजधानी दिल्ली सहित देश के अनेक भागों में सिख बन्धुओं के नृशंस नरसंहार का सिलसिला शुरू हो गया। श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति ने इन परिस्थितियों में अपने आंदोलन को एक वर्ष के लिए रोक दिया।

द्वितीय धर्म संसद

अक्टूबर 1985 में कर्नाटक के उडुपि में द्वितीय धर्म संसद आयोजित हुई। तत्कालीन समय में केन्द्र में प्रधानमंत्री राजीव गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार सत्ता में थी और उत्तर प्रदेश की कांग्रेस सरकार के मुख्यमंत्री वीरबहादुर सिंह थे। लेकिन द्वितीय धर्म संसद में उपस्थित हिन्दू समाज के प्रतिनिधियों ने एकजुट होकर केंद्र सरकार को जन्मभूमि पर लगे ताले को खोलने की चेतावनी दी। फैजाबाद के तत्कालीन जिला न्यायाधीश के. एम. पाण्डेय ने 1 फरवरी 1986 को ताला खोलने का आदेश दे दिया।

मन्दिर का प्रारूप

अब प्रश्न मंदिर के निर्माण का था। इसके लिए आवश्यक था मंदिर का प्रारूप। सोमनाथ मंदिर का प्रारूप बनाने वाले सोमपुरा के पौत्र तथा मंदिर शिल्प के प्रख्यात विशेषज्ञ चन्द्रकान्त सोमपुरा को मंदिर का प्रारूप तैयार करने का काम सौंपा गया। उन्होंने 270 फीट लम्बे, 135 फीट चौड़े और 127 फीट ऊंचे दो तल वाले भव्य मंदिर का प्रारूप तैयार किया।

श्रीराम-शिला पूजन

जनवरी 1989 में श्रीरामजन्मभूमि पर मंदिर के शिलान्यास की घोषणा की गई। मंदिर निर्माण का संदेश गांव-गांव तक पहुंचाने के लिए शारदीय नवरात्रि के प्रथम दिन 30 सितम्बर 1989 को देश भर में राम-शिलाओं के पूजन की योजना को क्रियान्वित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। हिन्दू समाज इस तरह से एकजुट हुआ कि इस दिन लगभग 2 लाख 75 हजार गांवों में राम-शिलाओं का पूजन किया गया और फिर पूजित शिलाओं को अयोध्या भेजा गया। विदेशों में निवास कर रहे भारतीयों ने भी मन्दिर निर्माण के लिए राम-शिलाएं अयोध्या भेजी।

श्रीराम मंदिर का शिलान्यास

घोषित कार्यक्रम के अनुसार 9 नवम्बर 1989 को प्रातः पूज्य महंत अवैद्यनाथ, पूज्य वामदेवजी तथा महंत रामचन्द्रदास परमहंस के नेतृत्व में भूमि उत्खनन कार्य संपन्न हुआ। शंखध्वनि और मंत्रोच्चार के बीच शिलान्यास कार्यक्रम में दलित समाज के बिहार निवासी रामभक्त कामेश्वर चौपाल ने राम मंदिर की पहली शिला रखी। शिलान्यास से पहले ही प्रदेश की कांग्रेस सरकार ने घोषणा कर दी थी कि शिलान्यास स्थल विवादित भूमि नहीं है। लेकिन 11 नवम्बर को जब सात हजार से अधिक सन्त तथा रामभक्त निर्माण हेतु कार-सेवा के लिए आगे बढ़े तो उन्हें कांग्रेस के तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी के निर्देशों पर प्रशासन ने रोक दिया और पूरे क्षेत्र को अपने कब्जे में ले लिया। 1989 में उत्तर प्रदेश विधानसभा और लोकसभा के चुनाव साथ-साथ हुए, जिनमें कांग्रेस को मुंह की खानी पड़ी। तत्कालीन प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से भेंट कर रामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के प्रतिनिधियों ने सारे ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक प्रमाण उनके समक्ष रखे। प्रधानमंत्री द्वारा शीघ्र ही निर्णय लेने का आश्वासन दिया गया। फरवरी माह में उन्होंने पुनः चार माह का समय मांगा जो जून में समाप्त हो गया।

प्रथम कार-सेवा

केंद्र सरकार द्वारा फिर भी कोई सकारात्मक उत्तर न मिलने पर 1 अगस्त 1990 को संतों ने वृंदावन में मंदिर निर्माण में आने वाली चुनौतियों से संघर्ष हेतु तन-मन-धन अर्पण करने का संकल्प किया। इसके

लिए देश भर में श्रीराम कार-सेवा समितियों का गठन किया गया। 15 अगस्त को घंटे-घड़ियाल और शंख बजाकर चेतावनी दिवस मनाया गया। सन्तों ने ज्योतिष्पीठ के शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती की अध्यक्षता में श्रीराम कार-सेवा समिति का गठन करके 30 अक्तूबर 1990 को देवोत्थान एकादशी के दिन मंदिर निर्माण के लिए कार-सेवा प्रारंभ करने की घोषणा कर दी। समिति का संयोजक विहिप के महामंत्री श्री अशोक सिंहल को बनाया गया।

राम-ज्योति

मंदिर-निर्माण का संकल्प घर-घर तक पहुंचाने के लिए राम-ज्योति को माध्यम बनाया गया। 1 सितंबर 1990 को अयोध्या में पूर्ण विधि-विधान से मंत्रोच्चार के बीच अरणि-मंथन द्वारा अग्नि का आह्वान किया गया। इस अग्नि से ही 18 अक्तूबर को दीपावली के दीप प्रज्ज्वलित करने का संदेश हिन्दू समाज को दिया गया। चार सौ बड़ी और सैकड़ों छोटी-छोटी यात्राओं के माध्यम से देश के लाखों गांवों तक यह ज्योति पहुंची और मंदिर-निर्माण का संकल्प भी।

कार सेवा रोकने का प्रयास

उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने घोषणा कि वह 30 अक्तूबर को अयोध्या में प्रस्तावित कार-सेवा नहीं होने देंगे। अयोध्या की ओर जाने वाली सभी सड़कें बंद करने के साथ सभी रेलगाड़ियां रद्द कर दी गईं। मंदिर क्षेत्र को पुलिस और अर्धसैनिक बलों ने घेरकर अयोध्या को छावनी में बदल दिया। मुख्यमंत्री ने अहंकारपूर्वक घोषणा की कि उनकी इजाजत के बिना अयोध्या में कारसेवक तो क्या, परिंदा भी पर नहीं मार सकेगा। कारसेवकों को रोकने के लिए उत्तर प्रदेश की पुलिस और अर्धसैनिक बलों के अतिरिक्त केन्द्रीय सुरक्षा बल के 1 लाख 80 हजार सशस्त्र जवान भी केन्द्र से मंगाकर तैनात किए गए।

और हुई कारसेवा

देवोत्थान एकादशी की भोर। अयोध्या नगरी में कर्फ्यू लागू था। सुरक्षा बलों को देखते ही गोली मारने के आदेश थे। सड़कों पर सशस्त्र जवानों के अतिरिक्त कोई नहीं था। प्रातः नौ बजे। मणिरामदास छावनी के द्वार खुले और पूज्य वामदेवजी और महंत नृत्यगोपाल जी बाहर निकले। ठीक इसी समय वाल्मीकि मंदिर का कपाट खोलकर विहिप महामंत्री श्री अशोक सिंहल सामने आए। उनके साथ उत्तर प्रदेश पुलिस के पूर्व पुलिस महानिरीक्षक श्रीशचन्द दीक्षित भी थे। इन नेताओं ने जय श्रीराम का उद्घोष कर जैसे ही हनुमानगढ़ी की ओर कदम बढ़ाए। घरों के दरवाजे खुलने लगे और हर घर से कारसेवक पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की टोलियां बाहर आने लगीं। देखते-ही-देखते भगवा पटके सर से बांधे हजारों लोगों का काफिला बढ़ चला। सबसे आगे संत, फिर महिलाएं और बच्चे, सबसे अंत में पुरुष। निहत्थे, निर्भीक कारसेवक रामनाम का संकीर्तन करते श्रीराम-जन्मस्थान की ओर आगे बढ़ रहे थे। प्रशासन हतप्रभ था। परिंदा भी पर न मार सके, ऐसी सुरक्षा का दावा करने वालों के होश उड़ गए।

कोठारी बंधु ने फहराया भगवा ध्वज

हनुमानगढ़ी के पास बौखलाए प्रशासन ने निहत्थे कारसेवकों पर लाठी बरसाना प्रारंभ कर दिया। श्री अशोक सिंहल के सिर पर लाठी का वार किया गया, जिससे वह घायल हो गए। उनके मुख से निकले जय श्रीराम के घोष ने कारसेवकों के पौरूष को जगा दिया। 68 वर्षीय श्रीशचन्द्र दीक्षित के साथ ही सैकड़ों कारसेवक भी प्रांगण के अंदर थे। देखते-ही-देखते कारसेवक ढांचे के गुम्बद पर चढ़ गए। कोलकता निवासी रामकुमार और शरद कोठारी ने बीच में स्थित मुख्य गुम्बद पर हिन्दू राष्ट्र का प्रतीक भगवा ध्वज फहरा दिया। फैज़ाबाद के एक नौजवान और एक साधु ने शेष दोनों गुम्बदों पर भी ध्वज लगा दिया। यह दोनों लोग गुम्बद से फिसलकर नीचे गिरे और रामकाज में बलिदान हो गए। उस रात अयोध्या सहित साकेत में अभूतपूर्व दीवाली मनाई गई। अहंकारपूर्ण दावे करने वाले मुख्यमंत्री मुलायम सिंह स्तब्ध रह गए। कारसेवा के लिए स्वयं को बलिदान करने वाले कार सेवकों के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार होने के कारण 31 अक्टूबर और 1 नवम्बर को कार सेवा रोक दी

गई और 2 नवम्बर को रामदर्शन कर कारसेवकों के वापस जाने की घोषणा की गई।

रक्त से लाल हुई अयोध्या

अभी दो दिन पहले ही अयोध्या ने दीवाली मनाई थी। आज कारसेवक रामलला के दर्शन कर अपने घरों को लौटने के लिए तैयार थे। प्रातः 11 बजे दिगम्बरी अखाड़े से परमहंस रामचन्द्र दास, मणिराम छावनी से महंत नृत्यगोपाल दास और सरयू तट से बजरंग दल संयोजक विनय कटियार तथा श्रृंगारहाट से सुश्री उमा भारती के नेतृत्व में कारसेवकों के जत्थे रामजन्मभूमि की ओर बढ़े। अपमान की आग में जल रहे मुख्यमंत्री मुलायम सिंह के निर्देश पर पुलिस-प्रशासन ने विनय कटियार और उमा भारती के नेतृत्व में चल रहे निहत्थे कारसेवकों पर बर्बर लाठीचार्ज किया। दिगम्बरी अखाड़े की ओर से परहंस रामचन्द्र दास के नेतृत्व में आ रहे जत्थे पर अश्रुगैस के गोले फेंके गए और फिर गोलियां बरसाई गई। सैकड़ों कार सेवकों की हत्या कर दी गई। मुख्य गुम्बद पर भगवा फहराने वाले शरद कोठारी को खोजकर गोली मारी गई। उसका छोटा भाई रामकुमार कोठारी, जब उसे बचाने के लिए आगे बढ़ा तो उसे भी मार दिया गया। दोनों रामकाज में समर्पित हो गए। राम सेवकों के इस बलिदान ने मंदिर-निर्माण के संकल्प को और दृढ़ कर दिया।

संतों की सिंह गर्जना

2-3 अप्रैल 1991 को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में चतुर्थ धर्म संसद सम्पन्न हुई और 4 अप्रैल को दिल्ली के बोट क्लब पर ऐतिहासिक रैली हुई, जिसमें देश भर से पच्चीस लाख से भी अधिक रामभक्त एकत्र हुए। रैली में संतों ने सिंह-गर्जना की कि मंदिर वहीं बनेगा। सरकार अपनी भूमिका स्वयं तय करे। उन्हें इस जन-ज्वार के आगे झुकना होगा या हटना होगा। रैली अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। केन्द्र की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार इससे पूर्व 17 सितम्बर को ही विश्वास मत में पराजित हो चुकी थी। कारसेवकों ने सरकारी अत्याचार के विरुद्ध नारा दिया था- "दिल्ली की गद्दी डूबो सके, सरयू में इतना पानी है," वह नारा सच साबित हुआ।

भूमि से मिले मंदिर के प्रमाण

जून 1991 में जब केंद्र सरकार द्वारा अधिग्रहित भूमि पर समतलीकरण का कार्य प्रारंभ हुआ तो दक्षिण-पूर्वी हिस्से से अनेक पत्थर प्राप्त हुए, जिनमें शिव-पार्वती की खंडित मूर्ति, सूर्य के समान अर्धकमल, मंदिर के शिखर का आमलक सहित उत्कृष्ट नक्काशी वाले पत्थर एवं मूर्तियां थी। यह सभी प्रस्तर खण्ड पुरातात्विक महत्व के थे और मंदिर की ऐतिहासिकता के स्वयं-सिद्ध प्रमाण थे। 31 अक्टूबर 1991 को एक बार पुनः कारसेवक अयोध्या में जुटे। समिति ने यद्यपि प्रतीकात्मक कार सेवा का ही निश्चय किया था, लेकिन उत्साही कारसेवक फिर गुम्बद पर चढ़ गए। उन्होंने वहां भगवा लहरा दिया। गुम्बदों को कुछ नुकसान हुआ, किन्तु प्रदेश सरकार ने मरम्मत करा दी। इसके बाद ही विवादित ढांचे की सुरक्षा के लिए इसके चारों ओर दीवार का निर्माण कराया गया।

सर्वदेव अनुष्ठान एवं नींव ढलाई

श्रीराम मंदिर के लिए हिन्दू समाज एकजुट होकर सड़क पर आ रहा था। मंदिर आंदोलन का नेतृत्व करने वाले नेता अपने-अपने स्तर से दिनरात एक किए हुए थे। इसी बीच आंदोलन के नेता स्वामी वामदेव, परमहंस रामचन्द्र दास, महंत अवैद्य नाथ, युगपुरुष परमानंद, स्वामी चिन्मयानंद आदि ने तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव से भेंट कर राम मंदिर में आने वाली बाधाओं को दूर करने का आग्रह किया। 9 जुलाई 1992 को 60 दिवसीय सर्वदेव अनुष्ठान प्रारंभ हुआ। जन्मभूमि के ठीक सामने शिलान्यास स्थल से भावी मंदिर की नींव के चबूतरे की ढलाई भी शुरू हुई। पंद्रह दिन तक इसके लिए कार-सेवा चली और नींव ढलाई का काम होता रहा। शांतिपूर्ण ढंग से चल रहीं इस कार-सेवा को रोकने के लिए कथित धर्मनिरपेक्षतावादियों ने पूरे देश में कोहराम मचाया। अपने ऊपर पड़ रहे दबावों के बाद प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने संतों से तीन माह के अंदर अयोध्या विवाद का सर्वमान्य हल निकालने का विश्वास दिलाया और कार सेवा का रोकने का अनुरोध किया। प्रधानमंत्री

का आग्रह स्वीकार कर लिया गया तथा नींव ढलाई का काम बंद कर दिया।

पादुका-पूजन

नन्दी ग्राम में भरतजी ने 14 वर्ष तक वनवासी रूप में रहकर अयोध्या का शासन भगवान की पादुकाओं के माध्यम से चलाया था। इसी स्थान पर 26 सितम्बर 1992 को श्रीराम पादुकाओं का पूजन हुआ। अक्टूबर माह में देश के गांव-गांव में इन पादुकाओं का पूजन करने के साथ ही जन-जागरण हुआ। रामभक्तों ने मंदिर निर्माण का संकल्प लिया।

द्वितीय कार सेवा

26-30 अक्टूबर 1992 को नई दिल्ली में पांचवीं धर्म-संसद हुई। संतों ने केंद्र सरकार के रवैए पर रोष जताते हुए समाधान नहीं होने पर 6 दिसम्बर से अयोध्या में पुनः कार-सेवा प्रारंभ करने की घोषणा की। निर्धारित समय-सीमा में केंद्र सरकार विवाद का हल नहीं तलाश पाई। परिणामस्वरूप 6 दिसम्बर 1992 को होने वाली कार-सेवा के लिए देश भर से कारसेवक आने लगे। न्यायालय के निर्देशों को ध्यान में रखते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने शपथ-पत्र दाखिल कर न्यायालय को आश्वासन दिया कि अधिग्रहित 2.77 एकड़ भूमि पर लम्बित विवाद का निर्णय होने तक किसी निर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी। धार्मिक गतिविधियों के तहत प्रतीकात्मक कार-सेवा ही होगी। इस आश्वासन के पश्चात उच्चतम न्यायालय ने सांकेतिक कार-सेवा की अनुमति प्रदान कर दी। अयोध्या में न्यायिक पर्यवेक्षक की नियुक्ति कर दी गई, जिसे कार-सेवा के दौरान इस पर नज़र रखनी थी कि शपथ-पत्र में दिए गए आश्वासनों का उल्लंघन न हो। समिति को यह विश्वास था कि प्रयाग उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्डपीठ से 2.77 एकड़ भूमि पर निर्माण संबंधी फैसला 6 दिसंबर से पहले आ जाएगा। सुनवाई 4 नवंबर को ही पूरी हो चुकी थी और निर्णय प्रतीक्षित था। इसी अनुमान के आधार पर कार-सेवा की तिथि 6 दिसंबर निर्धारित की गई। यह न्यायालय के संज्ञान में भी था और न्यायालय ने कार-सेवा से तीन दिन पूर्व अपना निर्णय 11 दिसम्बर तक के लिए सुरक्षित कर दिया। वस्तुतः यह भूमि श्रीरामजन्मभूमि न्यास की अपनी भूमि थी, जिसे मुलायम सिंह सरकार ने अधिग्रहित कर लिया था। न्यास ने न्यायालय से इस अधिग्रहण को अवैध घोषित करते हुए न्यास को भूमि वापस सौंपे जाने की मांग की थी। इसी भूमि पर कार-सेवा प्रस्तावित थी। 11 दिसंबर को सुनाए अपने फैसले में न्यायालय ने न्यास के दावे को उचित मानते हुए भूमि अधिग्रहण की अधिसूचना को अवैध घोषित कर दिया।

6 दिसम्बर का दिन

अयोध्या में लाखों की संख्या में कारसेवक पहुंच चुके थे। मंदिर समिति इन्हें व्यवस्थित करने के लिए प्रयास कर रही थी। कार-सेवा का स्वरूप पंक्तिबद्ध रूप से दोनों मुठ्ठियों में सरयू की रेत लाकर निर्माण-स्थल पर डालने तक सीमित कर दिया गया। 6 दिसम्बर की सुबह कारसेवक सरयू में स्नान कर निर्धारित समय पर रामकथा कुंज में जुटने लगे। लगभग 10 बजे औपचारिक कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। संतों तथा आंदोलन के नेताओं ने कारसेवकों को संबोधित करना शुरु किया। इसी मध्य कुछ कारसेवक अधीग्रहित भूमि (जिस पर कार-सेवा प्रस्तावित थी) की ओर उत्साह के साथ बढ़ने लगे। मंच संचालक ने कारसेवकों से प्रस्तावित कार-सेवा-स्थल तुरंत खाली करने की अपील की और व्यवस्था में लगे कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया कि जो कारसेवक परिसर खाली न कर रहे हों, उन्हें बाहर कर दिया जाए।

उत्साहित कारसेवकों का टूट गया धैर्य

कारसेवकों से बलपूर्वक कार-सेवा स्थल खाली कराने का प्रयास शुरू होते ही उनका धैर्य टूट गया। स्वयंसेवकों को परे धकेलकर बैरीकेडिंग को लांघते हुए कारसेवकों का समूह अंदर घुस गया। यह देखकर अन्य कारसेवक भी उस ओर दौड़ पड़े और सारे वातावरण में जयश्रीराम के नारे गूंजने लगे। उनमें से कुछ कारसेवक विवादित ढांचे तक भी जा पहुंचे। नेताओं ने पहले मंच से ही स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया, जिसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। ढांचे की ओर बढ़ने वाले अधिकांश कार-सेवक

दक्षिण भारतीय थे, जिन्हें देखकर सबसे पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह (महासचिव) हो.वे. शेषाद्रि ने कन्नड़, तमिल, तेलुगू और मलयालम में कारसेवकों से वापस आने की अपील की। इसका कोई असर न हुआ तो तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी और सुश्री उमा भारती ने भी प्रयास किया। प्रयास बेकार गया। स्थिति नियंत्रण से परे हो चुकी थी। आंदोलन के नेता ही नहीं, सुरक्षा बल भी कुछ कर सकने की स्थिति में नहीं थे।

विवादित ढांचा ध्वस्त

कारसेवकों में उत्साह तो अपरिमित था। किन्तु अपना मनोरथ पूरा करने के लिए उनके पास कोई औजार नहीं था। प्रारंभ में तो वह ढांचे को केवल हाथों से ही धक्का दे रहे थे। किन्तु शीघ्र ही कुछ नौजवानों ने सुरक्षा के लिए लगाए गए बैरीकेडिंग के पाइपों को निकाल लिया और उससे ढांचे पर प्रहार करने लगे। दोपहर 1:30 बजे ढांचे की एक दीवार को कारसेवकों ने ढहा दिया। इससे उत्साहित कारसेवक और तीव्रता से प्रहार करने लगे। कारसेवकों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। 2:45 बजे से पहले ही पहला गुम्बद गिराने में सफल हो गए। गुम्बद के साथ ही उस पर चढ़े कई कारसेवक भी नीचे गिरे और गिराए गए गुम्बद के नीचे दब गए। 4.30 बजे दूसरा गुम्बद भी धराशायी हो गया। लगभग 4.45 बजे अचानक तीव्र आवाज के साथ धूल का एक बादल उठा और आसमान में छा गया। कुछ पल के लिए लगा मानो सब कुछ ठहर गया। धूल का गुबार कम होने पर देखा कि तीसरा गुम्बद भी नीचे आ चुका था। विवादित ढांचे का अब नामो-निशान भी न बचा था। इतिहास का चक्र 464 वर्षों बाद अपनी परिक्रमा पूरी कर वहीं लौट आया था।

जन्मभूमि पर अस्थायी मंदिर का निर्माण

कारसेवकों ने विवादित स्थल को समतल करने का काम प्रारंभ कर दिया। समतलीकरण का काम 6 दिसम्बर की सारी रात और 7 दिसम्बर के पूरे दिन चलता रहा। समतल भूमि पर ईंट,मिट्टी और गारे से एक चबूतरे का निर्माण कर उस पर रामलला को स्थापित कर दिया गया और पूजा-अर्चना प्रारंभ हो गई। 8 दिसम्बर को केन्द्र सरकार के निर्देश पर वहा सुरक्षा बलों ने पहुंचकर सब कुछ अपने नियंत्रण में ले लिया। लेकिन रामलला के नवनिर्मित मंदिर की पूजा-अर्चना नियमित रूप से चलती रही।

मंदिर भूमि का पुनः अधिग्रहण

27 दिसम्बर 1992 को केन्द्र सरकार ने विवादित क्षेत्र और उसके आस-पास की 70 एकड़ भूमि का अधिग्रहण और इस मामले पर उच्चतम न्यायालय से सलाह लेने का फैसला लिया। न्यायालय की सलाह मिलने के बाद 7 जनवरी को राष्ट्रपति द्वारा जारी किए गए एक अध्यादेश से उक्त भूमि का अधिग्रहण कर लिया गया। अधिग्रहण अध्यादेश ने 3 अप्रैल 1993 को संसदीय कानून (एक्ट नं. 33/1993) का स्वरूप लिया। अध्यादेश के एक बिन्दु पर तत्कालीन राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने उच्चतम न्यायालय से संविधान की धारा-143 के अंतर्गत विवादित स्थल की ऐतिहासिकता के विषय में परामर्श मांगा कि क्या ढांचे वाले स्थान पर 1528 से पूर्व कोई हिन्दू मंदिर था, जिसे गिराकर तथाकथित विवादित ढांचा खड़ा किया गया?" अधिग्रहण अध्यादेश और राष्ट्रपति महोदय के प्रश्न की वैधानिकता पर आपत्ति उठाते हुए उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर हुई। उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायधीश वैंकटचलैया की अध्यक्षता में पांच न्यायधीशों-न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा, न्यायमूर्ति जी. एन. रे, न्यायमूर्ति ए. एम. अहमदी तथा न्यायमूर्ति एस. पी. भरूचा की पीठ बनी। इस पीठ में केंद्र सरकार द्वारा किए गए अधिग्रहण अध्यादेश तथा राष्ट्रपति महोदय के प्रश्न पर विस्तारपूर्वक सुनवाई हुई। उच्चतम न्यायालय ने इस प्रश्न का उत्तर देने का दायित्व प्रयाग उच्च न्यायालय पर डाल दिया। उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने यह मानते हुए कि यदि स्थान पर किसी भी भवन को तोड़ा गया है तो उसके अवशेष भूमि के नीचे अवश्य दबे होंगे, राडार तरंगों के माध्यम से भूमि के नीचे का अध्ययन कराने का निश्चय किया।

राडार तरंगों से हुई जांच

न्यायालय के निर्देश पर कनाडा के वैज्ञानिकों ने मंदिर

क्षेत्र की राडार फोटोग्राफी की। अपनी रिपोर्ट में इन वैज्ञानिकों द्वारा भूमि के नीचे किसी विशाल भवन के अवशेष दबे होने की बात कही। रिपोर्ट की पुष्टि के लिए उच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार के पुरातत्व विभाग को खुदाई करने के आदेश दिए। खुदाई में राडार तरंगों की जांच में पाए गए अवशेष प्राप्त हुए। इसमें 27 दीवारें, दीवारों में लगे नक्काशीदार पत्थर, प्लास्टर, चार फर्श, दो पंक्तियों में 52 स्थानों पर खम्बों के नीचे की नींव की रचना मिली। एक शिव मंदिर भी प्राप्त हुआ। यह सभी तथ्य न्यायालय द्वारा रिकॉर्ड किए गए।

दंगों का दौर और नेताओं की गिरफ्तारी

ढांचा ढहने के बाद देश भर में दंगों का दौर प्रारंभ हो गया। अयोध्या से लौट रहे कारसेवकों पर स्थान-स्थान पर हमले हुए। राष्ट्रव्यापी हिंसा में मरने वालों की संख्या एक हजार से अधिक हो गई। पाकिस्तान और बांग्लादेश में भी बड़ी संख्या में मंदिर तोड़े गए और हिन्दुओं के जान-माल को नुकसान पहुंचाया गया। बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी ने भारत की कानून व्यवस्था पर अविश्वास व्यक्त करते हुए संयुक्त राष्ट्र से सहायता की अपील की। उधर 6 दिसम्बर की शाम उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने पद से त्यागपत्र दे दिया। लेकिन केंद्र सरकार ने तुष्टिकरण की नीति के अंतर्गत उनका इस्तीफा स्वीकार नहीं किया और प्रदेश सरकार को बर्खास्त कर दिया। संसद में भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी ने लोक सभा में विपक्ष के नेता पद से त्यागपत्र दे दिया। भाजपा अध्यक्ष डॉ मुरली मनोहर जोशी, विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी, विहिप के कार्यकारी अध्यक्ष विष्णुहरि डालमिया, महामंत्री श्री अशोक सिंहल,बजरंग दल प्रमुख विनय कटियार,सांसद उमा भारती सहित अधिकांश बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए। सभी के विरुद्ध देशद्रोह का मुकदमा कायम किया गया। केन्द्र सरकार ने साम्प्रदायिकता के आरोप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद तथा बजरंग दल, जमायत-ए-इस्लामी हिन्द और इस्लामी सेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया। साथ ही 15 दिसम्बर 1992 को केन्द्र सरकार ने मध्य प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश की भाजपा सरकारों को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया। अयोध्या की घटनाओं की जांच के लिए न्यायमूर्ति मनमोहन सिंह लिब्रहान को नियुक्त कर दिया।

नेताओं की रिहाई

ललितपुर के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने 6 दिसम्बर की घटना के बाद गिरफ्तार डा. मुरली मनोहर जोशी, लालकृष्ण आडवाणी, विष्णुहरि डालमिया, श्री अशोक सिंहल, विनय कटियार, उमा भारती आदि को बिना शर्त, ससम्मान रिहा करने का आदेश दिया। सरकार एफआईआर के संबंध में प्राथमिक साक्ष्य भी प्रस्तुत करने में असमर्थ रही। इसके बाद मंदिर आंदोलन लगातार जारी रहा। चूंकि मसला पूरी तरह न्यायिक प्रक्रिया के दायरे में आ गया था। इसलिए साधु-संत, विहिप, भाजपा सहित अन्य सभी संगठन देश भर में आम जनमानस के बीच जाकर मंदिर निर्माण की मांग को पूरी ताकत से उठाते रहे। हालांकि भाजपा नेता अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में बनी गठबंधन सरकार के दौरान संतों के माध्यम से समझौते के प्रयास जारी रहे, लेकिन समझौता न तो होना था और न ही हुआ।

न्यायपीठ का बार-बार पुनर्गठन

1996 से उच्च न्यायालय में प्रारम्भ हुए मुकदमे में महत्वपूर्ण पहलू है- न्यायपीठ का बार-बार पुनर्गठन। किसी-न-किसी न्यायाधीश के सेवानिवृत्त होने के कारण न्यायपीठ का पुनर्गठन हुआ। बहस के दौरान ही न्यायपीठ का तीन बार पुनर्गठन हुआ। अन्तिम पुनर्गठन की परिस्थिति अगस्त 2009 के अन्तिम सप्ताह में उस समय बनी, जब न्यायपीठ में 1996 से मुकदमे को सुन रहे न्यायाधीश को मध्य प्रदेश में मुख्य न्यायाधीश नियुक्त कर दिया गया और उन्होंने अगले दिन से ही अपना कार्य बन्द कर दिया। न्यायपीठ में न्यायमूर्ति एस. यू. खान की नियुक्ति होने के बाद न्यायिक प्रक्रिया शुरू हुई। जनवरी 2010 के बाद प्रतिदिन अदालत बैठने लगी। 27 जुलाई 2010 को सुनवाई समाप्त हो गई। न्यायपीठ ने 30 सितम्बर 2010 को अपना निर्णय सुनाया। इस निर्णय के विरुद्ध प्रायः सभी पक्षों ने उच्चतम न्यायालय में

अपील कर दी। 30 सितंबर को न्यायमूर्ति ए. यू. खान, न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल और न्यायमूर्ति डी. वी. शर्मा की पीठ ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया। उच्च न्यायालय ने अपने फैसले में कहा कि विवादित 2.7 एकड़ जमीन को तीन भागों में बांटा जाए। एक भाग रामलला विराजमान, दूसरा भाग निर्मोही अखाड़ा और तीसरा भाग सुन्नी वक्फ बोर्ड को दिया जाए। विवादित स्थल को तीन भागों में बांटने के आदेश को मानने के लिए हिंदू पक्ष तैयार भी हो गया था। लेकिन सुन्नी वक्फ बोर्ड ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय को उच्चतम न्यायालय में चुनौती दे दी। उच्चतम न्यायालय ने इस आदेश पर रोक लगा दी।

उच्चतम न्यायालय ने किया समझौते का प्रयास

उच्च न्यायालय के फैसले पर उच्चतम न्यायालय में अपील दायर करने वालों में उत्तर प्रदेश सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड, निर्मोही अखाड़ा, अखिल भारतीय हिंदू महासभा और भगवान श्रीरामलला विराजमान थे। मार्च 2017 में उच्चतम न्यायालय ने हिंदू और मुस्लिम पक्ष को न्यायालय के बाहर समझौता करने की सलाह दी। उच्चतम न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश जगदीश सिंह खेहर ने कहा था कि यह मामला धर्म और आस्था से जुड़ा हुआ है। इसलिए दोनों पक्ष आपस में बैठें और बातचीत के माध्यम से हल निकालने की कोशिश करें। इसके बाद श्रीश्री रविशंकर इस मुद्दे पर आगे आए। मुस्लिम पक्ष को इस मामले में मनाने की कोशिश की गई। समझौता वार्ताओं में 2017 समाप्त हो गया, लेकिन कोई निष्कर्ष नहीं निकला।

और फिर आया अंतिम निर्णय

समझौते की प्रक्रिया असफल होने के बाद उच्चतम न्यायालय में मामले की सुनवाई शुरू हुई। इसके बाद 27 सितंबर 2018 को यह मामला संविधान पीठ को भेजने का निर्णय लिया गया। 8 जनवरी 2019 को मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने अपनी प्रशासनिक शक्तियों का उपयोग करते हुए, विवाद को पांच-न्यायाधीशों की संविधान पीठ को सौंप दिया। 8 मार्च को उच्चतम न्यायालय ने सभी पक्षों को आठ सप्ताह में मध्यस्थता का प्रयास करने का आदेश दिया। मध्यस्थता की कार्यवाही 13 मार्च को शुरू हुई। लेकिन समझौता नहीं हुआ। आखिरी कोशिश विफल होने के बाद 6 अगस्त से श्रीराम जन्मभूमि जमीन विवाद पर ऐतिहासिक सुनवाई शुरू हुई। यह सुनवाई 40 दिनों तक चली और पीठ ने बाबरी मस्जिद कमेटी, निर्मोही अखाड़ा, रामलला विराजमान समेत अन्य पक्षों को सुना। उच्चतम न्यायालय की संविधान पीठ में मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई, न्यायमूर्ति डी. वाई. चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति अब्दुल नजीर, न्यायमूर्ति अशोक भूषण और न्यायमूर्ति शरद अरविंद बोबड़े शामिल थे, जिन्होंने 9 नवंबर 2019 को अपना ऐतिहासिक निर्णय सुनाया। इतिहास में हुई गलतियों को सुधारते हुए उच्चतम न्यायालय ने सर्वसम्मति से जन्मभूमि को हिन्दू पक्ष को सौप दिया। न्यायिक इतिहास में यह वह ऐतिहासिक घटना थी, जिसने देश की राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकारों को एकजुटता के सूत्र में बांध दिया। उच्चतम न्यायालय ने सर्वसम्मति से देवता श्रीरामलला विराजमान को टाइटल प्रदान किया। विवादित 2.77 एकड़ जमीन रामलला विराजमान को दिए जाने का आदेश दिया।

श्रीरामजन्मभूमि मंदिर का भूमिपूजन

अयोध्या स्थित श्रीरामजन्मभूमि पर भगवान श्रीराममन्दिर के निर्माण का पहला चरण मार्च 2020 से प्रारम्भ हुआ और 5 मार्च के दिन अयोध्या में एक नया इतिहास लिखा गया। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने सभी तैयारियों के बाद मंदिर निर्माण के लिए पहला कदम बढ़ाया और मंदिर भूमि का पूजन किया। भूमिपूजन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, ट्रस्ट प्रमुख महंत नृत्य गोपाल दास और सरसंघचालक मोहन भागवत ने विशिष्ट अतिथि के रूप में हिस्सा लिया। वैदिक विधिविधान के साथ संपन्न हुई पूजा के बाद श्रीराम मंदिर की आधारशिला के रूप में 40 किलो चांदी की ईंट की स्थापना हुई। यह दृश्य आनंद से परे था। अयोध्या सहित देश भर का हिन्दू समाज भावविहल था। साधु-संतों की आंखों में चमक थी, खुशी के भाव थे और पूरे हिन्दू समाज को अहसास हो रहा था कि प्रभु राम वापस आ रहे हैं। ■

कर्तव्य पथ पर लहराया नारी शक्ति एवं भारतीयता का परचम

फोटो : प.सू.का.

| अजीत कुमार सिंह |

भारतीय भूमि पर स्वतंत्रता, शक्ति, प्रगति के साथ ही समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नारी की भूमिका के जीवंत स्वरूप को उस समय पूरे वैश्विक समाज ने देखा, जब गत 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में भारत ने संविधान की 75वीं वर्षगांठ मनाई। घने कोहरे के मध्य राजधानी दिल्ली स्थित कर्तव्य पथ पर आयोजित समारोह में भारत की गौरवपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता, समृद्धिता, वैभव, सामर्थ्य, प्रगति, शक्ति, शौर्य और सैन्य ताकत को सभी ने महसूस किया। चालीस वर्ष बाद ऐसा हुआ, जब भारत की राष्ट्रपति के साथ ही अतिथि देश के राष्ट्राध्यक्ष 'पारंपरिक बग्घी' में बैठकर राष्ट्रपति भवन से मुख्य समारोह स्थल तक पहुंचे। समारोह का प्रारम्भ राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ हुआ। राष्ट्रगान पश्चात राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, मुख्य अथिति एवं फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह एवं अन्य अथितियों को 21 तोपों द्वारा दी गई सलामी से वातावरण गूंज उठा।

भारतीय सेना के चार हेलीकॉप्टरों की पुष्पवर्षा के बाद कर्तव्य पथ पर गणतंत्र दिवस परेड का प्रारंभ 'पहली बार' सैन्य बैंड के स्थान पर भारतीय गीत-संगीत के पारम्परिक वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनियों को बिखरते हुए नारी शक्ति का प्रतीक 'आह्वान' बैंड के आगमन से हुआ। सौ से अधिक महिला कलाकारों द्वारा बजाए गए शंख, नादस्वरम, नगाड़े की गूंज से पूरा वातावरण भारतीयता के रंग में रंग गया। यह भी 'पहली बार' हुआ, जब हल्के उन्नत हेलीकॉप्टरों की सलामी उड़ान के

साथ ही सैन्य सेवा के तीनों अंगों की महिला टुकड़ियों ने मार्चपास्ट करते हुए नारी के शौर्य, शक्ति और साहस को दर्शाया। सैन्य सेवा के विभिन्न अंगों की टुकड़ियों के अनुशासित मार्च पास्ट के साथ ही परेड में आधुनिक एवं स्वदेशी सैन्य उपकरणों, प्रणालियों एवं तकनीकी का प्रदर्शन टी-90 भीष्म टैंक, मिसाइल सिस्टम, युद्धक वाहन, राडार प्रणालियों के रूप में पूरे विश्व ने देखा।

फोटो : प.सू.का.

फोटो : प.सू.का.

नौसेना, वायु सेना, भारतीय तट रक्षक, रक्षा अनुसन्धान एवं विकास संगठन की झांकियों ने स्वदेशी उपलब्धियों एवं क्षमताओं को दर्शाया, तो पूर्व सैनिकों की वीरता एवं बलिदान का प्रदर्शन 'राष्ट्र निर्माण : पहले भी, अब भी, आगे भी और हमेशा' विषय पर केंद्रित झांकी ने किया। भारतीय तटरक्षक, अर्धसैनिक बल, दिल्ली पुलिस, राष्ट्रीय कैडेट कोर, राष्ट्रीय सेवा योजना के दलों का नेतृत्व भी महिला अधिकारियों ने किया। परेड में फ्रांस के सशस्त्र बलों के संयुक्त बैंड और मार्चिंग दल के 120 सदस्यों ने भी हिस्सा लिया। साथ ही जीप में सवार होकर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित अठारह विजेता बच्चे भी परेड का हिस्सा बने।

इस वर्ष गणतंत्र दिवस परेड में सोलह राज्यों एवं केंद्रित शासित प्रदेशों की झांकियों ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता को प्रदर्शित किया। 'अयोध्या : विकसित भारत-समृद्ध विरासत' विषय पर केंद्रित उत्तर प्रदेश की झांकी में भगवान श्रीराम के बालस्वरूप के साथ ही एक हिस्से में प्रयागराज में होने वाले आगामी माघ मेले और 2025 में होने वाले महाकुंभ के प्रतीक रूप में दो साधुओं को कलश के साथ प्रदर्शित किया गया। इसी तरह अरुणाचल प्रदेश, हरियाणा, मणिपुर, मध्य प्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़, राजस्थान, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, लद्दाख, तमिलनाडु, गुजरात, मेघालय, झारखंड और तेलंगाना की झांकियों ने भी विकास के विभिन्न आयामों को सामने रखा, जिसमें नारी शक्ति का प्रधानता रही। परेड में झांकियों के माध्यम से जिन मंत्रालय, विभाग एवं संगठनों ने अपनी-अपनी उपलब्धियों और प्रगति को प्रदर्शित किया, उनमें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, बंदरगाह-जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस, गृह मंत्रालय, विदेश मंत्रालय, भारत निर्वाचन आयोग, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) एवं संस्कृति मंत्रालय आदि शामिल रहे।

परेड में रक्षा मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय द्वारा लगातार तीसरे वर्ष 'नारी शक्ति की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति-संकल्प से सिद्धि' विषय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम 'वंदे भारतम्' प्रस्तुत किया गया। इसमें लगभग पंद्रह सौ महिला कलाकारों ने भारत के मूल मंत्र 'विविधता में एकता' का संदेश देते हुए रंगारंग प्रस्तुतियों का प्रदर्शन किया, जिसने सभी को मंत्रमुग्ध किया। आदिवासी नर्तकों, लोक नर्तकों और शास्त्रीय नर्तकों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के भव्य प्रदर्शन में विभिन्न राज्यों में विशिष्ट रूप से प्रचलित तीस लोक नृत्य शैलियों के साथ-साथ समकालीन शास्त्रीय नृत्य और फ़िल्मी शैलियों का प्रस्तुतीकरण किया गया।

परेड का बड़ा आकर्षण मोटर साइकिल पर 260 से अधिक महिलाओं के रोमांचक करतबों का रहा, जिसमें महिलाओं ने चंद्रयान, सर्वत्र सुरक्षा, अभिवादन और योग से सिद्धि सहित अन्य विभिन्न आकृतियों के माध्यम से वीरता और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया। मोटर साइकिल दस्ते में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, सीमा सुरक्षा बल और सशस्त्र सीमा बल की महिलाकर्मी शामिल थीं। समारोह का समापन सलामी उड़ान से हुआ। सलामी उड़ान के दौरान सभी की निगाह आकाश में गरजते विमानों और हेलीकॉप्टरों पर टिकी रहीं। सलामी उड़ान में फ्रांस के तीन विमान, वायु सेना के 46, नौसेना का एक और थल सेना के चार हेलीकॉप्टरों ने हिस्सा लिया। तेजस, राफेल, जगुआर, डकोटा, लड़ाकू हेलीकॉप्टर' 'प्रचंड', उन्नत हल्के हेलीकॉप्टर और अपाचे ने आकाश में तेजस, नेत्र, वरुण, वज्रांग, त्रिशूल, अमृत, प्रचंड, अर्जन और तंगेल सहित विभिन्न संरचना बनाकर दर्शकों को रोमांचित करने में कोई कोई कसर नहीं छोड़ी। परेड का समापन राष्ट्रगान और तिरंगे गुब्बारे छोड़े जाने के साथ हुआ।

इस बार गणतंत्र दिवस परेड 'विकसित भारत' और 'भारत-लोकतंत्र की मातृका' विषय पर केंद्रित रही। परेड में लगभग तेरह हजार अतिथियों ने हिस्सा लिया, जिनमें विशेष अतिथियों के साथ ही देश के विभिन्न ग्रामों के सरपंच, श्रम कार्य करने वाले, महिला कार्यकर्ता, इसरो की महिला अंतरिक्ष वैज्ञानिक, योग शिक्षक, खेल एवं पैरालंपिक पदक विजेता शामिल थे। इनके साथ ही सर्वश्रेष्ठ स्वयं सहायता समूह, किसान उत्पादक संगठन, पीएम मन की बात कार्यक्रम के संदर्भ और प्रोजेक्ट वीर गाथा 3.0 के 'सुपर-100' और राष्ट्रीय स्कूल बैंड प्रतियोगिता के विजेता भी कर्तव्य पथ पर उपस्थित रहे।

समारोह की एक विशेषता यह भी रही कि कर्तव्य पथ पर दर्शकों एवं अतिथियों के बनाए गए बाड़ों में पीछे की तरफ देश के हर कोने में बनने वाली लगभग 1,900 साड़ियों और पर्दों को प्रदर्शित किया गया। इन्हें लकड़ी के फ्रेम के साथ ऊंचाई पर लगाया गया था, जिनमें क्यूआर कोड के माध्यम से प्रयोग की जाने वाली बुनाई और कढ़ाई कला के विषय में बताया गया। परेड में हिस्सा लेने वाली संस्कृति मंत्रालय की 'भारतः लोकतंत्र की जननी' विषय पर केंद्रित झांकी पहले स्थान पर रही, वही दिल्ली पुलिस की महिला टुकड़ी और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ी को सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग टुकड़ी का पुरस्कार मिला।

गणतंत्र दिवस समारोह-2024 का समापन 29 जनवरी को विजय चौक पर आयोजित बीटिंग रिट्रीट कार्यक्रम से हुआ। बीटिंग रिट्रीट में 'ए मेरे वतन के लोगों,' 'कदम-कदम बढ़ाए जा', 'ताकत वतन की हमसे है,' 'कारगिल,' 'शंखनाद' सहित कई धुनें थल सेना, नौसेना, वायु सेना और केंद्रीय अर्ध सैनिक बलों के बैंडों ने बजाकर सभी को संगीत की धुन पर झूमने के लिए बाध्य किया। बीटिंग रिट्रीट में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी सहित अन्य केंद्रीय मंत्री, वरिष्ठ अधिकारी और आम जनता उपस्थित रही। और फिर, बीटिंग रिट्रीट के समापन के साथ जब राष्ट्रपति भवन, नार्थ एवं साउथ ब्लॉक सहित अन्य भवन एक साथ तिरंगी रोशनियों की तेज चमक से रोशन हुए, तो यह चमक 'विकास पथ' पर पूरी शक्ति और क्षमता के साथ आगे बढ़ रहे भारत के स्वर्णिम भविष्य का संकेत दे रही थी। ■

फोटो : प.सू.का.

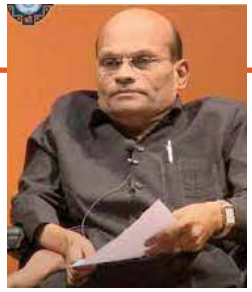

FORMER VICE PRESIDENT OF ABVP M. K. SRIDHAR HONORED WITH PADMA SHRI

| Pradeep Kumar |

The former Vice President of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP), M. K. Sridhar, has been bestowed with the prestigious Padma Shri award in 2024, eliciting exuberance from the dedicated Karyakartas of ABVP.

M. K. Sridhar's association with ABVP dates back to 1971, and over the years, he has assumed various responsibilities within the organization, including serving as the Bangalore Vibhag Pramukh, Karnataka Prant Cashier, and Karnataka Prant Vice President. In 1994, he dedicatedly held the position of President of Karnataka Prant before assuming the role of ABVP Vice President from 1994 to 1998. Throughout his tenure, Sri Sridhar collaborated closely with influential figures within the organization, such as Yeshwant Rao Kelkar and Madandas Devi .

The Padma Shri recognition stands as a testament to M. K. Sridhar's outstanding contributions, extending beyond ABVP to encompass the broader educational and social spheres. His journey from grassroots leadership to the pinnacle of the organization exemplifies the values and commitment instilled in ABVP members. Heartfelt congratulations pour in from the Karyakartas, acknowledging Sri M. K. Sridhar's enduring dedication and service to the cause.

M. K. Sridhar, a distinguished name in the fields of education and literature, emerges as an able administrator whose contributions to the nation's educational policies are unparalleled. His life and work embody courage and determination, detailed in the Kannada book 'Sahasra Padhi,' as well as 'Usha Kirana' and 'Karmaveera.' This truestory of courage serves as inspiration, especially for the specially-abled.

Academically, M.K. Sridhar holds a Post Graduate degree in Commerce and a Doctor of Philosophy from the University of Mysore. His two-decade tenure as a senior lecturer at Vijaya College, Bengaluru, and subsequent roles as a Reader at Canara Bank School of Management Studies, Professor, Director, and Dean at Bangalore University showcase his commitment to education. Guiding numerous scholars, publishing papers, and completing research projects funded by government bodies underscore his dedication to academic excellence.

In the broader educational landscape, Mr. Sridhar played a pivotal role as a member of the Draft Committee of the National Education Policy in 2019. He also chaired Karnataka's Committee on Technology. Enabled Learning and held significant positions, such as Member Secretary of Karnataka Knowledge Commission, Karnataka State Innovation Council, and Member of the Central Advisory Board of Education (CABE). His accolades include the Karnataka Rajyothsa Award, Kempe Gowda Award, and the General President Gold Medal. Beyond education, Sridhar Makam Krishnamurthy emerges as a multifaceted personality, not just an educationist but also a social worker and activist. His involvement with the Indian Red Cross Society Karnataka chapter and advocacy on national and social issues demonstrate his commitment to broader societal welfare. In conclusion, M. K. Sridhar's Padma Shri recognition is a testament to his multifaceted contributions spanning ABVP, education, literature, and social work. His life and work serve as an inspiration for generations, embodying the values of dedication, courage, and determination. His untamed spirit will undoubtedly remain a source of inspiration for many youths in the years to come. ■

जेएसएससी सीजीएल परीक्षा पेपर लीक के विरोध में अभाविप का प्रदर्शन

लंबे अंतराल के बाद होने वाली झारखंड सामान्य स्नातक योग्यताधारी संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा-2023 (जेएसएससी सीजीएल) विवादों में घिर गई है। सामान्य अध्ययन का पर्चा परीक्षा से पहले ही लीक होने का मामला सामने के बाद अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने राज्य सरकार के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया है। कड़ी सुरक्षा-व्यवस्था के दावे के बीच पर्चा लीक होने पर धरना-प्रदर्शन करके मामले की जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से कराने की मांग की है।

जानकारी हो कि राज्य में गत 28 जनवरी को जेएसएससी सीजीएल परीक्षा के पहले दिन ही सामान्य अध्ययन का पर्चा लीक हो गया। मामला सामने आने के बाद छात्र आक्रोशित हो उठे। छात्रों के आक्रोश को भांपते हुए झारखंड कर्मचारी चयन आयोग ने परीक्षा को रद्द कर दिया। साथ ही 4 फरवरी को भी होने वाली परीक्षा स्थगित कर दी। जेएसएससी सीजीएल परीक्षा राज्य के 735 केंद्रों पर तीन शिफ्ट में आयोजित की गई थी, जिसमें करीब तीन लाख अभ्यर्थी शामिल हुए। राज्य के लगभग साढ़े छह लाख अभ्यर्थियों ने परीक्षा में आवेदन कर रखा है।

लंबे अंतराल के बाद आयोजित जेएसएससी सीजीएल परीक्षा के पेपर लीक होने की घटना के विरोध में अभाविप ने पूरे प्रांत में चरणबद्ध तरीके से आंदोलन किया। अभाविप झारखंड के प्रांत मंत्री सौरभ झा ने कहा कि एक ओर सरकार नए नए नियम कानून बनाने में व्यस्त है, तो दूसरी ओर प्रतियोगी परीक्षाओं में गड़बड़ी झारखंड के लिए आम बात बन गई है। लंबे समय के पश्चात परीक्षा का आयोजन होना और उसमे भी गड़बड़ी का होना छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। पेपर लीक के विरोध में प्रदेश स्तरीय आंदोलन किए जा रहे हैं। प्रदेश सह मंत्री शुभम राय ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा लगातार छात्रों के छला जा रहा है। अभाविप मांग करती है कि घटना की सीबीआई जांच कराकर दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाए।

प्रश्नपत्र लीक मामले को लेकर गिरीडीह जिला इकाई ने टॉवर चौक पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का पुतला दहन किया गया और मामले की सीबीआई जांच कराने की मांग की। साहिबगंज में भी अभाविप कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री सोरेन का पुतला फूंका। प्रदर्शनकारी कार्यकर्ताओं ने पेपर लीक मामले की सीबीआई जांच कराने की मांग की। जमशेदपुर में पेपर लीक का विरोध करते हुए राज्य सरकार के विरुद्ध प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन करने वाले छात्रों ने कहा कि सरकार हमारे भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही हैं। देवघर में भी अभाविप ने मुख्यमंत्री सोरेन का पुतला फूंका । ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

शिक्षा क्षेत्र में की गई बढ़ोत्तरी का अभाविप ने किया स्वागत

केंद्र सरकार द्वारा संसद में पेश किए गए अंतरिम बजट में शिक्षा क्षेत्र के लिए की गई बजट बढ़ोत्तरी का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने स्वागत किया है। अभाविप ने कहा है कि अंतरिम बजट में बुनियादी ढांचे के विकास और रोजगार सृजन के लिए पूंजीगत व्यय बढ़ाने का निर्णय अभिनंदनीय है। अंतरिम बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अभाविप महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तुत किया गया अंतरिम बजट आशापूर्ण है। यह देश को प्रत्येक क्षेत्र में विकास तथा समृद्धि की नई ऊंचाइयों पर ले जाने में अपना योगदान करेगा। गरीब, युवा, महिला एवं किसान आदि वर्गों के उत्थान पर केंद्रित अंतरिम बजट सर्वस्पर्शी एवं सर्वसमावेशी है। भारत के दीर्घकालिक विकास को साधने की कोशिश इस बजट में हुई है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार को रोजगार सृजन, शैक्षणिक संस्थानों के ढांचागत विकास तथा विभिन्न वर्गों के उत्थान की दिशा में और तेजी से प्रयास करने होंगे। शिक्षा क्षेत्र की आवश्यकताओं पर सभी हितधारकों को ध्यान देने की आवश्यकता है। अभाविप को उम्मीद है कि केंद्र सरकार, युवाओं के मुद्दों पर प्रमुखता से कार्य को आगे बढ़ाएगी तथा विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं की नेतृत्वकारी भूमिका से देश सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में शीघ्रता से आगे बढ़ सकेगा। यह बजट, आत्मविश्वास से युक्त भारतीयों की आशाओं को सकारात्मक दिशा देने वाला है। भारत के समग्र विकास के आत्मविश्वास से युक्त यह बजट चुनाव के दबाव से मुक्त तथा भारतीयों की आकांक्षाओं के अनुरूप है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

मांग

GPAT छात्रवृत्ति पर स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी करे यूजीसी : अभाविप

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से मांग की है कि स्नातक फार्मेसी एप्टिट्यूड टेस्ट (GPAT) उत्तीर्ण करने वाले ऐसे विद्यार्थी जो विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत हैं, को छात्रवृत्ति प्रदान की जाए। साथ ही इस संबंध में स्पष्ट दिशा-निर्देश भी जारी किए जाएं। अपनी मांगों के सम्बन्ध में अभाविप ने यूजीसी को एक ज्ञापन भी सौपा।

जानकारी हो कि 2023 में स्नातक फॉर्मेसी एप्टीट्यूड टेस्ट (जीपीएटी) उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को यूजीसी द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान करना अधिसूचित किया गया है। परन्तु फॉर्मेसी विषय का अध्ययन करा रहे संबद्ध महाविद्यालयों में छात्रवृत्ति के लिए जारी दिशा-निर्देशों में छात्रों को आईडी बनाने और पोर्टल पर डाटा जमा करने से संबंधित कोई जानकारी नहीं है। ऐसी स्थिति में संबद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

स्नातक फॉर्मेसी एप्टीट्यूड टेस्ट (जीपीएटी) छात्रवृत्ति मिलने के आश्वासन पर देशभर से आठ हजार से अधिक विद्यार्थियों ने महाविद्यालयों में प्रवेश लिया है। विश्वविद्यालय के विभाग में अध्ययनरत विद्यार्थियों को जीपीएटी पोर्टल पर पंजीकरण करने के बाद छात्रवृत्ति प्राप्त हो रही है। लेकिन उसी विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालय के विद्यार्थी छात्रवृत्ति से वंचित हो रहे हैं। इसीलिए अभाविप ने यूजीसी से जीपीएटी सम्बन्धी समस्याओं का शीघ्र निस्तारण करने की मांग की है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

कांग्रेस सरकार के कारण शिक्षा क्षेत्र में पैदा हुए संकट

शिक्षा क्षेत्र की गंभीर खामियों, राज्य सरकार की नकारात्मकता और उच्च शिक्षण संस्थानों को राजनीति का अड्डा बनाए जाने के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। अभाविप के प्रदेश मंत्री आकाश नेगी ने कांग्रेस सरकार पर उच्च शिक्षण संस्थाओं का लगातार शोषण करने का आरोप हुए कहा कि प्रदेश सरकार सभी विश्वविद्यालयों का स्तर गिराने में लगी हुई है।

शिक्षा क्षेत्र में कांग्रेस सरकार की अकर्मण्यता और अनदेखी को सामने लाने के लिए आयोजित एक प्रेस वार्ता में अभाविप के प्रदेश मंत्री आकाश नेगी के कहा कि शिक्षा परिसरों में फैली नकारात्मक के लिए प्रदेश सरकार ही जिम्मेरदार है। कांग्रेस सरकार के नकारात्मक रवैये के कारण छात्रों को स्कूल-कालेज में आवश्यक सुविधाओं के अभाव का सामना करना पड़ रहा है । प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में हो रही कुत्सित राजनीति छात्रों का भविष्य अंधकार की तरफ ले जा रही है। उन्होंने बताया कि प्रदेश के सबसे पुराने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में दो सौ शिक्षकों के पद लम्बे समय से खाली हैं । इन्हें भरने के स्थान पर कुछ विभागों में कांग्रेसी विचारधारा वाले लोगों को भर्ती करने के प्रयास किए जा रहे हैं। मंडी स्थित सरदार पटेल विश्वविद्यालय में भी शिक्षकों को बायोमेट्रिक हाज़िरी का बहाना बना कर वेतन नहीं दिया जा रहा है। इसलिए अध्यापक संघ भी विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य को छोड़ने के लिए तैयार है। अगर ऐसा होता है तो छात्रों को बड़ी असुविधा का सामना करना पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि कृषि एवं किसानों की हितैषी होने का दावा करने वाली सरकार प्रदेश के दो प्रमुख कृषि विश्वविद्यालयों क्रमशः वानिकी विश्वविद्यालय (नौणी) एवं कृषि विश्वविद्यालय (पालमपुर) में भी अपना हस्तक्षेप बढ़ा रही है। धर्मशाला (जदरांगल) में बनने जा केंद्रीय विवि के स्थाई परिसर के मामले में भी प्रदेश सरकार की भूमिका को देखा जा सकता है। सरकार को तीस करोड़ की धनराशि पर्यावरण एवं वन मंत्रालय में जमा करानी है। इसे नहीं जमा किया जा रहा है । सरकार का कहना है कि भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है और रिपोर्ट आने के बाद ही वह धनराशि जमा कराएगी। लेकिन सच यह है कि भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट जून 2023 में आ चुकी है और इस रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भूमि निर्माण कार्य के लिए उपयुक्त है। अभाविप प्रदेश सरकार को यह सुनिश्चित कराना चाहती है कि राज्य सरकार ने अगर जल्द से जल्द शिक्षण संस्थानों में हस्तक्षेप बंद ना किया, तो उसे छात्रों का रोष झेलने के लिए तैयार रहना होगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

गोवा

छात्र परिषद चुनाव में अभाविप की शानदार जीत

गोवा विश्वविद्यालय छात्र परिषद के चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) कार्यकर्ता अक्षय सेट और सुदीप नाइक ने क्रमशः अध्यक्ष और सचिव पद पर जीत दर्ज की है। इसके साथ ही कार्यकारी परिषद के छह पदों पर अभाविप कार्यकर्ता निर्वाचित हुए हैं। अभाविप की जीत पर हर्ष व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने विजयी कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं दी हैं।

गोवा विश्वविद्यालय में अभाविप की जीत ने परिसर में अभाविप कार्यकर्ताओं की सक्रियता एवं सांगठनिक कौशल का परिचय दिया है। अभाविप ने गोवा विश्वविद्यालय के अंदर छात्र हित में सदैव प्रखरता से आवाज उठाई है। इसी का परिणाम है कि शीर्ष दो पदों पर अभाविप के उम्मीदवारों ने जीत हासिल की।

अभाविप पदाधिकारियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए विजयी कार्यकर्ताओं को बधाई दी और कहा कि अभाविप कार्यकर्ताओं की जीत छात्रों में अभाविप के प्रति बढ़ते विश्वास का परिचायक है। गोवा विश्वविद्यालय में मिले नेतृत्व अवसर का सम्मान करते हुए अभाविप विश्वविद्यालय में वर्ष भर छात्रहित में काम करने एवं विश्वविद्यालय में शैक्षिक परिवेश को बेहतर बनाने हेतु संकल्पित है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

भारतीय भाषाओं में पाठ्यसामग्री की उपलब्धता से दूर होगी छात्रों की समस्या

केंद्र सरकार द्वारा सभी विद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों को अगले तीन वर्षों में पाठ्यक्रम एवं अध्ययन सामग्री को, संविधान की 8वीं अनुसूची में वर्णित 22 भारतीय भाषाओं में छात्रों के लिए डिजिटल रूप में उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है। इस निर्णय का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने स्वागत किया है। अभाविप का मानना है कि भारत में भाषाई विविधता देश की समृद्ध संस्कृति का अभिन्न अंग है। इस बहुप्रतीक्षित निर्णय से छात्र अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में भी स्कूली एवं उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। इससे छात्रों में विषय की अधिक समझ एवं अधिक स्पष्ट अभिव्यक्ति के अवसर मिलेंगे। साथ ही इससे छात्रों के लिए अधिक अवसरों के द्वार भी खुलेंगे।

वर्तमान में भारत में अधिकांश पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सामग्री अंग्रेजी माध्यम में ही उपलब्ध है। यही कारण है कि भारत के दूर-दराज इलाके से आने वाले प्रतिभावान अधिकतर छात्रों को भाषाई अवरोध के चलते अपने पाठ्यविषयों को समझने में दुर्गमता झेलनी पड़ती है। नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इस भाषाई अवरोध को दूर करने एवं भारतीय भाषाओं के प्रसार के सुझाव दिए गए हैं। केंद्र सरकार के इस निर्णय से छात्र अपनी क्षेत्रीय भाषा में भी अपनी रूचि के विषय पढ़ सकेंगे एवं उन विषयों में अपनी अधिक पकड़ बनाते हुए अधिक विशेषज्ञता प्राप्त कर पाएंगे। अभाविप का मानना है कि यह मुहिम भारतीय भाषाओं का महत्व पुनः बढ़ाने के साथ ही, भारतीय भाषाओँ की शिक्षा प्राप्त करने वाले विशेषज्ञों के लिए रोजगार के असीम अवसरों के द्वार भी खोलेगा। अभाविप के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी निर्दिष्ट है कि भारतीय भाषाओं में शिक्षा के अवसर उपलब्ध होने चाहिए। शिक्षा मंत्रालय का यह निर्णय भारत की समृद्ध भाषाई सम्पदा के महत्व को बढ़ाने का कार्य करेगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

CONCERN

ABVP Condemns Gruesome Murder of Bharatiya Student, Vivek Saini, in Georgia

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) expresses deep sorrow and condemns the brutal murder of 25-year-old MBA student Vivek Saini in Georgia, USA. The heinous incident unfolded on January 16 when Vivek Saini asked a 53-year-old homeless man, Juan Faulkner, to leave a convenience store where Vivek Saini worked. Faulkner responded by attacking Saini with a hammer 50 times on his head, leading to Vivek's instant death at the scene.

ABVP is appalled by this tragic loss and condemns the senseless violence that claimed the life of a promising young student. ABVP demands the Bharatiya government to raise this issue with the US Government to take immediate and strong action in ensuring justice for Vivek Saini. There have been numerous cases of violence based on racism against the Bharatiya community in the US, where the US government has not taken appropriate action. ABVP demands a thorough investigation into the circumstances surrounding this horrific incident, along with all other cases of violence against the Bharatiya community, and calls for appropriate measures by the US government to prevent such tragedies in the future.

ABVP National General Secretary, Shri Yagywalkya Shukla, stated, "Our thoughts are with the grieving family of Vivek Saini, and we extend our heartfelt condolences. We demand that central government authorities to raise this issue with the US government to bring the perpetrator to justice, sending a strong message that such acts of violence arising out of racism will not be tolerated in any society." ■

(Rashtriya Chhatrashakti Team)

U.N. SECURITY COUNCIL A VICTIM OF GEOPOLITICAL RIVALRY

| K N Pandita |

The structure of the five permanent (p-5) members of the Security Council was first introduced in 1945. Nearly eight decades have gone by; the structure with its mandate remains the same. The world has changed a lot but the SC has not. Stewart Patrick, director of the Global Order and Institutions Programme at the Carnegie Endowment for International Peace said that after eight decades, SC has remained the same even as major players like India and Brazil emerged.

Compounding membership frustrations has been how each of the P-5 countries has retained veto power, allowing each to unilaterally block Security Council resolutions that are not aligned with their own national interests. What is the result of this situation? It is "council paralysis, exacerbated by deepening geopolitical rivalry between Western democracies and authoritarian China and Russia," says Patrick.

SC in public estimation

Sometimes intellectual input in the context of current estimation of the SC can be devastatingly frank The Carnegie observer remarked, "To a growing proportion of the world's governments and citizens, the council today is both feckless and unjust, dominated by irresponsible and unrepresentative powers inclined to abuse their position rather than safeguard the peace" No words can be more scathing than these to paint the ugly picture of the Security Council.

Earlier, Secretary General Antonio Gutierrez had suggested that it was time to reform the Security Council to align with the realities of today's world. However, he also said whether countries like India ascended to the group should be decided by the UN Security Council members. The International Crisis Group's Gowan said that Russia's war in Ukraine and the evolving conflict in the Middle East have lent an extra sense of urgency to reform of the SC. He added that UN member states were particularly "angry" about Russia's use of its veto over Ukraine and US vetoes over Gaza.

Last year a resolution was before the SC that described Russia's annexation of four regions of Ukraine as illegal and a "threat to international peace and security." Russia vetoed it. In response, the Ukrainian president called for Moscow to be stripped of its veto power because its veto rendered the international body "ineffective." This is precisely the impression many members of the UN General Assembly carry. More recently, Washington vetoed a resolution that demanded an immediate humanitarian ceasefire in Gaza. The Council has been struggling to deal with more issues before it like the wars in Sudan and Myanmar but without any positive outcome. That is why Gowan of International Crisis Group said that "the UN is losing credibility as big power tensions rise."

Vinay Kaura of Sardar Patel University says that the SC had remained the same even though the world had undergone dramatic changes since 1945, with nations like Brazil, Japan and Germany gathering strength politically and economically. He added that many countries

think SC's performance and legitimacy have come down. Geopolitical rivalry between the liberal democracies and authoritarian regimes has also deepened.

Hurdles in the way

What holds back the SC from initiating a reform process given so much criticism and plausible reasons for reforms? Yes, there are reasons which pop up once we make a dispassionate analysis. As we know, there is a tall order of amending the UN Charter, with different countries taking varying positions on the issue. Another hindrance is the veto power granted to five permanent members. There is strong disagreement among member states regarding 'whether' and 'how' the current veto provisions should be extended to new permanent members of UNSC? Any change in the voting procedure would require the consent of two-third of UN members which seems a difficult thing to happen. After all, we cannot close our eyes to the growing geopolitical rivalries and deepening polarisation among the member states. It is a reality.

Courtney Fung, a scholar-in-residence at Asia Society, Australia, agrees that the odds are many. One reason, he argues, is the competing proposals over reform, which included an African-led plan, as well as submission by the so-called G-4 of Brazil, Japan, India and South Africa. Reform processes are consensus-driven even in the politicised environment of today's UNSC. In 2022, President Biden tried to harness the sense of discontent with the Security Council. Speaking about Russia's war in Ukraine, he said at the UN, "Washington supported increasing the number of both permanent and non-permanent representatives of the Security Council." Though he had set the agenda for other powers and held many consultations, he was not able to make progress though the commitment remains in place.

Politicising SC

At the SC meeting last month, Russia offered full support to India's candidacy for SC permanent membership. Russian Ambassador to New Delhi commented, "India had a balanced and independent approach to most topical issues and warranted becoming a permanent member of the SC." A few months earlier, President Putin had also backed India's view saying international laws must reflect the "requirements and demands of today".

The P-5 represent victor nations of the WWII, and now with Russia behind India's bid, only one China remains opposed to admitting the South Asian giant. Political observers say that Beijing is determined to remain the only Asian nation in the exclusive group, and will not be swayed by Moscow's effort to see India in. Professor Vinay Kaura of Sardar Patel University thinks that China is not influenced by Russia's consistent support for India, resisting any restructuring of the Security Council that carried the prospect of bringing India into the group; this being the bottom line of China's anti-India policy, China can fumble for a variety of flimsy reasons to justify its opposition to India. For example, the US joined a high-altitude military exercise with India near its Himalayan border with China. It is gall for Beijing. Since China is the only Asian power represented in the UNSC, it does not want any other Asian country to share this privilege.

Professor Kaura is right in concluding that Beijing's opposition had also been apparent in its strategy to downsize and restrict India's strategic influence at both a regional and global level.

China's view of reform

China does say that it supports reforms to the SC but it has stopped short of providing specific proposals. Its reform concept is limited to "a greater say for developing nations." Consider this vague and imprecise statement of Wang Yi, the Chinese foreign minister in the context of reforming the SC, "Reform should increase the representation and voice

of developing countries, allowing more small and medium-sized countries to have more opportunities to participate in the decision-making of the council." He is talking of "small and medium-sized countries." Are Brazil or Japan or Germany or India small/medium sized countries? He just means to be munificent to the small countries but not empower them with the powers which P-5 enjoy. India is adamant that she should have permanent membership of the SC being the world's largest democracy, the most populated country in the world and the first country in the world with the highest economic growth rate. Prime Minister Modi made it clear in one of his addresses to the General Assembly. He had said how can we talk of it as a primary organ of a global body, when continents of Africa and Latin America are ignored? How can it claim to speak for the world when it's most populous country, and its largest democracy, is not a permanent member?"

Richard Gowan of the International Crisis Group thinks that for China the absolute red line would be if Japan won a permanent seat on the SC. China wants to remain the only Asian power with a permanent seat in the SC and keeping India out. Gowan said that China had previously used its blocking power to support Pakistan over the Kashmir conflict with India. If China has to deal with India as an equal at the UN, it would reduce its influence over Asian-related diplomacy.

Conclusion

The only one out of the five permanent members of the Security Council opposes unavoidable reforms in the UNSC. It is an authoritarian ideology pitted against democratic ideology. China is the real cause of polarization of the comity of nations. The majority group at the SC will have to seriously think how consensus on very vital global issues can be built at the SC and how the veto power can be protected against abuse. The sooner this crisis is resolved the better, failing which the future of this important world body is in jeopardy, and so is world peace. ■

बंगाल

जानलेवा हमले में छह छात्र घायल, तृणमूल छात्र परिषद से जुड़े हैं अराजक तत्व

पश्चिम बंगाल के नदिया जिला अंतर्गत नवद्वीप के विद्यासागर महाविद्यालय में घुसे अराजक तत्वों ने धारदार हथियारों से हमला करके छह छात्रों को घायल कर दिया। इनमें से दो की हालत गंभीर बनी हुई है। घायलों में छात्राएं भी शामिल हैं। बताया जा रहा है कि छात्राओं पर हमले का एक वीडियो भी वायरल हुआ है। घटना 16 जनवरी को घटित हुई।

घटना को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है। अभाविप ने कहा है कि छात्रों पर जानलेवा हमला तृणमूल छात्र परिषद के गुंडों द्वारा किया गया। अभाविप इसकी कड़े शब्दों में निंदा करती है। साथ ही मांग करती है कि प्रकरण में दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई के लिए ठोस कदम उठाए जाए। तृणमूल कांग्रेस के संरक्षण में अराजक तत्व एवं गुंडे शैक्षिक परिसरों का माहौल लगातार खराब करने का प्रयास कर रहे हैं। उनके विरुद्ध कोई ठोस एवं कड़ी कार्रवाई भी नहीं की जा रही है। अभाविप ने कहा कि बंगाल सरकार द्वारा पोषित गुंडे लगातार शैक्षिक परिसरों में अराजकता फैलाने का कार्य कर रहे हैं, किंतु उन पर कार्रवाई नहीं की जाती है। ऐसे कृत्य बंगाल सरकार की छात्र विरोधी एवं अराजक छवि को उजागर कर रहे है। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

वैश्विक मानव थे अपने नंदाजी : दत्तात्रेय होसबाले

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री प्रो. वेद प्रकाश नंदा की स्मृति में दिल्ली स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में एक श्रद्धाजंलि सभा का आयोजन किया गया, जहां उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। जानकारी हो कि गत 2 जनवरी को अमेरिका में प्रो. वेद प्रकाश नंदा का निधन हो गया था। कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले, विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आलोक कुमार, भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, हिन्दू स्वयंसेवक संघ के अंतरराष्ट्रीय समन्वयक सौमित्र गोखले, विहिप के संयुक्त महामंत्री स्वामी विज्ञानानंद, भाजपा के अंतरराष्ट्रीय विभाग के अध्यक्ष विजय चौथाईवाले, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष रामबहादुर राय आदि उपस्थित थे।

गत 17 जनवरी को आयोजित श्रद्धांजलि सभा में संघ के सर कार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए कहा कि वेद प्रकाश नंदा जी ने एक उत्कृष्ट शिक्षाविद, असाधारण शिक्षक एवं अनुकरणीय स्वयंसेवक के रूप में कार्य कर भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा दी। नंदा जी बहुआयामी व्यक्तित्व तो है ही। जीवन में उन्होंने संकल्प लिया और मनुष्य निर्माण के कार्य में जुड़ गए। अंतिम समय तक वह संगठन के बारे में सोचते रहे। अपने अध्ययन क्षेत्र में अपने परिश्रम से दिग्गज बने। मानवाधिकार के लिए अनेकों कार्य किए। वह वैश्विक मानव थे। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से विदेश में अपने करियर बनाने के साथ संघ के प्रति कार्य निष्ठा कभी नहीं छोड़ी। उन्होंने कहा कि प्रो. नंदा ऐसे विरले महापुरुषों में से थे जो पृथ्वी के

लवण कहलाते और जिनके कारण समाज जीवन को जीने का स्वाद आता है।

श्रद्धांजलि सभा में भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने कहा कि प्रो. नंदा दुनिया भर के ज्ञान के एनसाइक्लोपीडिया थे। उन्होंने संघ की विचारधारा के साथ पूरे विश्व में एक प्रगतिशील व्यक्तित्व के रूप में पहचान स्थापित की और सादगीपूर्ण जीवन जिया। अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार भाटिया ने कहा कि विद्यार्थी परिषद के प्रति उनका प्रेम अंतिम दिनों तक बना रहा। वह विराट व्यक्तित्व को धनी थे। हिन्दू स्वयंसेवक संघ के अंतरराष्ट्रीय समन्वयक सौमित्र गोखले ने कहा कि नंदा जी अगणित कार्यकर्ताओं के प्रेरणास्रोत हैं। वह छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखते थे। मानवाधिकार को लेकर वह कई देशों में प्रवास करते रहते थे। अमेरिका में हिंदू समाज के बीच बड़ा स्थान था। उनकी स्मृतियां हम सभी को प्रेरणा देती रहेगी।

विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा कि नंदा जी की प्रतिष्ठा से वह कई दशकों से परिचित थे। विदेशों में जाने वाले लोगों के प्रति हमारी धारणा होती है की करियर के लिए जाते हैं लेकिन नंदा जी ने करियर को पीछे रखकर संघ का कार्य खड़ा किया। भाजपा के अंतर्राष्ट्रीय विभाग के अध्यक्ष विजय चौथाईवाले ने कहा कि किसी आयाम को विश्वस्तर पर कैसे ले जाया जा सकता है, वह नंदा जी बहुत बारीकी से जानते थे। सौम्य स्वभाव के धनी नंदा जी की वैचारिक गहराई अत्यधिक थी। उनकी कमी हमेशा रहेगी।

प्रो. वेद प्रकाश नंदा : एक दृष्टि

अभाविप की स्थापना के प्रारंभिक दशकों में संगठन को सुदृढ़ बनाने एवं संगठन विस्तार में स्व. वेदप्रकाश नंदा जी का योगदान अविस्मरणीय है। स्वर्गीय वेदप्रकाश नंदा 1951 में अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री एवं 1956-1959 तक राष्ट्रीय अध्यक्ष के दायित्व पर रहे। उनका जन्म अविभाजित भारत के गुजरांवाला में 1934 में हुआ था। पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में परास्नातक, दिल्ली विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई पूर्ण करने के बाद उन्होंने नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी से एलएलएम किया एवं अमेरिका स्थित येल यूनिवर्सिटी में भी अध्ययन किया। 1972 से वह डेनवर विश्वविद्यालय के स्टर्म कालेज ऑफ लॉ में विधि विषय के प्रोफेसर थे। भारत से लेकर विदेश तक, उनके पढ़ाए-प्रेरणा पाए विद्यार्थी रहें हैं। अमेरिका की पूर्व सेक्रेटरी ऑफ स्टेट कोंडोलीज़ा राइस, ईरान के पूर्व विदेश मंत्री जवाद ज़रीफ़, न्यू मैक्सिको सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश पेट्रीसियो सेर्ना जैसे अनेक नाम प्रोफेसर नंदा के छात्र रहे है। स्व. प्रो नंदा जी ने भारतीय विचारों की अलख जगाने का कार्य कर रहे 'हिंदू स्वयंसेवक संघ' में अमेरिकी क्षेत्र के संघचालक के रूप में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रो. नंदा द्वारा शिक्षा क्षेत्र किए गए कार्य

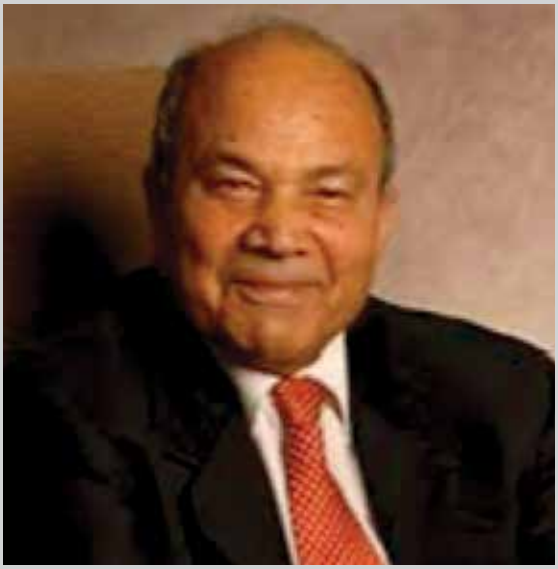

को अभिज्ञान प्रदान करते हुए 2018 में उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। वह वर्ल्ड ज्यूरिस्ट एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष, अमेरिकन सोसाइटी ऑफ इंटरनेशनल लॉ के मानद उपाध्यक्ष तथा यूनाइटेड स्टेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन राइट्स की सलाहकार परिषद के सदस्य रहे। अंतर्राष्ट्रीय कानून के विभिन्न क्षेत्रों में 24 पुस्तकों के लेखक या सह-लेखक होने के कारण उन्हें व्यापक रूप से प्रकाशित किया गया था। प्रोफेसर वेद नंदा को सामुदायिक शांति निर्माण के लिए गांधी, किंग, इकेदा पुरस्कार सहित कई पुरस्कार भी मिले। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

कड़ाई से लागू किए जाए कोचिंग केन्द्रों के नियमन संबंधी दिशा-निर्देश : अभाविप

कोचिंग केन्द्रों के नियमन के लिए केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी व्यापक दिशा-निर्देशों के धरातल पर वास्तविक क्रियान्वयन के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने उचित कदम उठाने का आह्वान किया है। अभाविप का मानना है कि वर्तमान में कोचिंग केन्द्रों से जुड़े मानसिक स्वास्थ्य, बुनियादी सुविधाओं का अभाव, अनियंत्रित शुल्क ढांचा सहित विभिन्न प्रश्नों ने शिक्षा क्षेत्र में नकारात्मक हलचल उत्पन्न की है। इसलिए नकारात्मक हलचल का समाधान उचित ढंग से होना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

जानकारी हो कि राजस्थान स्थित कोटा में विद्यार्थियों की आत्महत्या सम्बन्धी लगातार सामने आ रही घटनाएं, दिल्ली के एक कोचिंग केन्द्र में आग के कारण बिल्डिंग से कूदकर जान बचाने वाले छात्रों के दृश्य सहित कई ऐसी घटनाएं सामने आ चुकी हैं, जिनसे कोचिंग केन्द्रों के गंभीर नियमन की आवश्यकता महसूस की जा रही है। अभाविप को उम्मीद है कि कोचिंग केन्द्रों के नियमन के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारों के जिम्मेदार विभाग शीघ्रता एवं जिम्मेदारी से कदम उठाएंगे।

अभाविप ने कहा कि कोचिंग संस्थानों के नियमन की दिशा में केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए दिशा-निर्देश स्वागतयोग्य तथा महत्वपूर्ण हैं। देश के प्रत्येक कोने में बिना नियम-कानून के चल रहे कई कोचिंग केन्द्र छात्रों-अभिभावकों तथा समाज के लिए चिंता का कारण हैं। ऐसे में प्रभावी दिशा-निर्देश होने से कोचिंग केन्द्रों से जुड़ी समस्याओं के समाधान की दिशा साफ हो सकेगी। अभाविप आशान्वित है कि कोचिंग केन्द्रों के नियमन से जुड़े दिशा-निर्देशों का शीघ्रता से क्रियान्वयन होगा तथा सभी हितधारकों के मत पर विचार-विमर्श कर उचित निर्णय लिए जाएंगे। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

उपलब्धि

सेना की पहली महिला सूबेदार बनी प्रीति रजक

महिला निशानेबाज (ट्रैपशूटर) एवं सैन्यकर्मी प्रीति रजक को भारतीय थल सेना में पहली बार महिला सूबेदार बनाया गया है। अभी तक वह हवलदार पद पर कार्यरत थीं। निशानेबाजी में असाधारण योग्यता के लिए उन्हें दिसंबर 2022 में पहली बार हवलदार पद पर नामांकित करते हुए सैन्य पुलिस कोर में शामिल किया गया था। प्रीति ने चीन स्थित हांगझू में हुए 19वें एशियाई खेलों में ट्रैप महिला टीम प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल करके भारत का गौरव बढ़ाया था। वर्तमान में सूबेदार प्रीति 2024 में पेरिस में आयोजित होने वाले ओलिंपिक खेलों की तैयारी कर रही हैं और इसके लिए वह सैन्य निशानेबाज़ी इकाई (एएमयू) में प्रशिक्षण ले रही हैं। मध्य प्रदेश की रहने वाली सूबेदार प्रीति एक मध्यमवर्गीय परिवार से हैं। बचपन से ही निशानेबाजी में सक्रिय प्रीति ने कई देशों में हुई स्पर्धा में

बेहतर प्रदर्शन कर भारत का नाम रोशन किया। थल सेना ने उन्हें सूबेदार पद पर पदोन्नत करते हुए उम्मीद व्यक्त की है कि उनकी महान उपलब्धि युवतियों को सेना में शामिल होने के लिए आगे आने के साथ-साथ निशानेबाजी में आगे आने के लिए प्रेरित करेगी। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

धूमधाम के साथ मनाई गई स्वामी विवेकानंद जयंती

दिल्ली से लेकर देश के सभी हिस्सों में स्वामी विवेकानंद की 161वीं जन्म जयंती को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में धूमधाम के साथ मनाया। देश के विभिन्न शिक्षण स्थलों में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अभाविप प्रत्येक वर्ष स्वामी विवेकानंद के जन्म दिवस 12 जनवरी को 'युवा दिवस' के रूप में एवं 12 से 23 जनवरी को युवा पखवाड़े के रूप में मनाती है। इस दौरान कला, शिक्षा, विज्ञान आदि से सम्बंधित प्रतियोगिताएं, कार्यक्रम एवं गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय में अभाविप ने विकसित भारत @2047 विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि मोनिका अरोड़ा ने कहा कि स्वामी जी के प्रेरक विचार हम सभी के लिए अनुकरणीय हैं। उनके विचारों को आत्मसात कर हम विकसित भारत बना सकते हैं। विशिष्ट अतिथि एवं अभाविप दिल्ली के प्रांत अध्यक्ष अभिषेक टंडन ने कहा कि स्वामी जी के विचारों पर चलकर ही विकसित भारत बन सकता है। अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री शिवांगी खरवाल ने भी स्वामी विवेकानंद जी का जीवन एवं उनके विचार युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बताए। दिल्ली प्रान्त मंत्री हर्ष अत्री ने आधुनिक भारत में शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी जी के विचारों को पढ़ना एवं उनका प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अभाविप इकाई ने स्वामी विवेकानंद जी की जयंती के उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। 161वीं जयंती की पूर्व संध्या पर गत 11 जनवरी को संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने स्वामी विवेकानंद को भारतीय इतिहास का महापुरुष बताया, जिन्होंने सर्वप्रथम भारतीय सनातन संस्कृति का बोध विश्व को कराया था। स्वामी जी का शिकागो की धर्म सभा में दिया गया ऐतिहासिक भाषण विश्व पटल पर आज भी भारत की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है जो विश्व बंधुत्व एवं करुणा पर आधारित है। स्वामी जी के उस ऐतिहासिक भाषण की महत्ता सिर्फ उनके संबोधन से नहीं बल्कि उनके द्वारा भारतीय संस्कृति एवं वेदों के ज्ञान के मध्य विचार की प्रगाढ़ता से थी। विशिष्ट अतिथि डा. सत्यनारायण शंखवार ने स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरणा लेते हुए अपने मन में सेवा का भाव रखने की आवश्यकता पर बल दिया। अभाविप काशी प्रांत के प्रांत मंत्री एवं केंद्रीय कार्यसमिति सदस्य अभय प्रताप सिंह ने कहा कि स्वामी जी के विचारों को आत्मसात करते हुए अभाविप देश भर के परिसरों में विभिन्न आयामों से भारत के विचार को सर्वोच्च रखने के लिए सतत कार्य कर रही है।

गोरखपुर में शैक्षिक, सामाजिक, खेल सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 1200 मेधावी सम्मानित किए गए। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के दीक्षा भवन में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने कहा कि

उन्हें अभाविप का कार्यकर्ता होने पर गर्व की अनुभूति होती है। राष्ट्र पुनर्निर्माण और समाज निर्माण का दूसरा नाम अभाविप है, जो आज की युवा पीढ़ी में ज्ञान, शील और एकता के मंत्र को प्रसारित कर रहा है। विशिष्ट अतिथि एवं दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति के प्रतीक हैं, गुरु बिना ज्ञान संभव नहीं है। हमारे विद्यार्थी हमारी पहचान है। अभाविप द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह के माध्यम से मेधाशक्ति को सम्मानित करने का प्रयास अत्यधिक प्रशंसनीय है। शिक्षाविद ओम कृष्ण मिश्र ने कहा कि जब विदेशी आक्रांताओं के कारण यहां की जनता ने स्वंय को कमजोर समझ लिया था, तब स्वामी विवेकानंद जी ने लोगों को राष्ट्र और समाज के प्रति जागृत करने का कार्य किया। अभाविप गोरक्ष प्रांत मंत्री मयंक राय ने कहा अभाविप राष्ट्र सेवा, समाज सेवा तथा मानव सेवा करने वाला विश्व का सबसे विशाल छात्र संगठन है। **गुजरात** में स्वामी विवेकानंद की जयंती पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। केंद्रीय विश्वविद्यालय (गुजरात) की विश्वविद्यालय इकाई ने राष्ट्रीय युवा दिवस पर अपने परिसर कार्य को प्रभावी बनाने हेतु अपने न्यूज लेटर CUGVoice का विमोचन किया। इस कार्यक्रम में अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजशरण शाही के साथ प्रदेश संगठन मंत्री हिमालय सिंह झाला एवं प्रदेश मंत्री समर्थ भट्ट उपस्थित थे।

सूरत में खेल गतिविधि के अंतर्गत विविध खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें 543 प्रतिभागियों ने सहभागिता ली। **राजस्थान** स्थित अजमेर जिले की सरवाड़ इकाई द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सरवाड़ में विवेकानंद जी की मूर्ति का अनावरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

महाकौशल में अभाविप ने सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता में 8840 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। **बिहार** स्थित बेगूसराय जिला इकाई के द्वारा जिला स्तरीय स्वामी विवेकानन्द प्रतिभा खोज प्रतियोगिता परीक्षा के विजेताओं को युवा दिवस पर पुरस्कृत किया गया। परीक्षा में लगभग 6 हजार से अधिक संख्या में छात्रों ने भाग लिया।

स्वामी विवेकानंद के विचार और युवाओं में उद्यमशीलता प्रोत्साहन शोध (SHoDH)- **जेएनयू** टोली ने 16 जनवरी को 'स्वामी विवेकानंद जी के दृष्टिकोण से युवाओं के बीच उद्यमिता' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। यह संगोष्ठी 'सशक्त और विकसित भारत' के निर्माण के लिए स्वामी विवेकानंद के विचारों, आग्रहों और दृष्टि की प्रासंगिकता पर केंद्रित थी।

ग्रेटर नोएडा के नॉलेज पार्क स्थित शारदा विश्वविद्यालय में अभाविप ने युवा महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया। मुख्य अतिथि प्रा.बीएस राजपूत ने कहा कि भारत की प्राचीन परंपरा वैज्ञानिक सोच के साथ बनाई गई है। मुख्य वक्ता अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री मनोज निखरा ने कहा कि विवेकानंद जी की जीवन यात्रा हम सभी युवाओं, छात्रों के लिए प्रेरणादायी है। विवेकानंद जी की शिक्षा और नशा मुक्त जीवन के संदेश का अनुपालन हम सभी युवाओं को करना होगा, तभी हमारा देश विकसित होगा।

राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे 'युवा पखवाड़े' के अंतर्गत अभाविप ने दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय में कवि सम्मेलन का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित राष्ट्रीय कवि संगम के अध्यक्ष जगदीश मित्तल ने अपनी ओजस्वी पंक्तियों से युवा तरुणाई को संबोधित करते हुए कहा कि हमें ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी संस्कृति की महान विभूतियों को स्मरण करना चाहिए और ऐसे सम्मेलन हर शिक्षण संस्थानों में कराने चाहिए। कवि सम्मेलन में उपस्थित कविगण ने अपनी भिन्न भिन्न कविताओं से उपस्थित श्रोता गण का मनोरंजन कर भगवान श्रीराम एवं अन्य भारतीय अस्मिता की महान विभूतियों का स्मरण किया। **हिमाचल प्रदेश** में स्वामी विवेकानंद जयंती के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन राम सिंह राजकीय महाविद्यालय देहरी में किया गया। कार्यक्रम में अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री राहुल राणा, जिला परिषद राहुल पठानिया, पुनीत महाजन सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे। प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में जिला स्तर पर प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

युवा दिवस की झलकियां

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 FEBRUARY, 2024
DATE OF PUBLISHING: 8 FEBRUARY, 2024

POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI
POSTING REGISTRATION NO. DL(C)-11/1409/2024-26
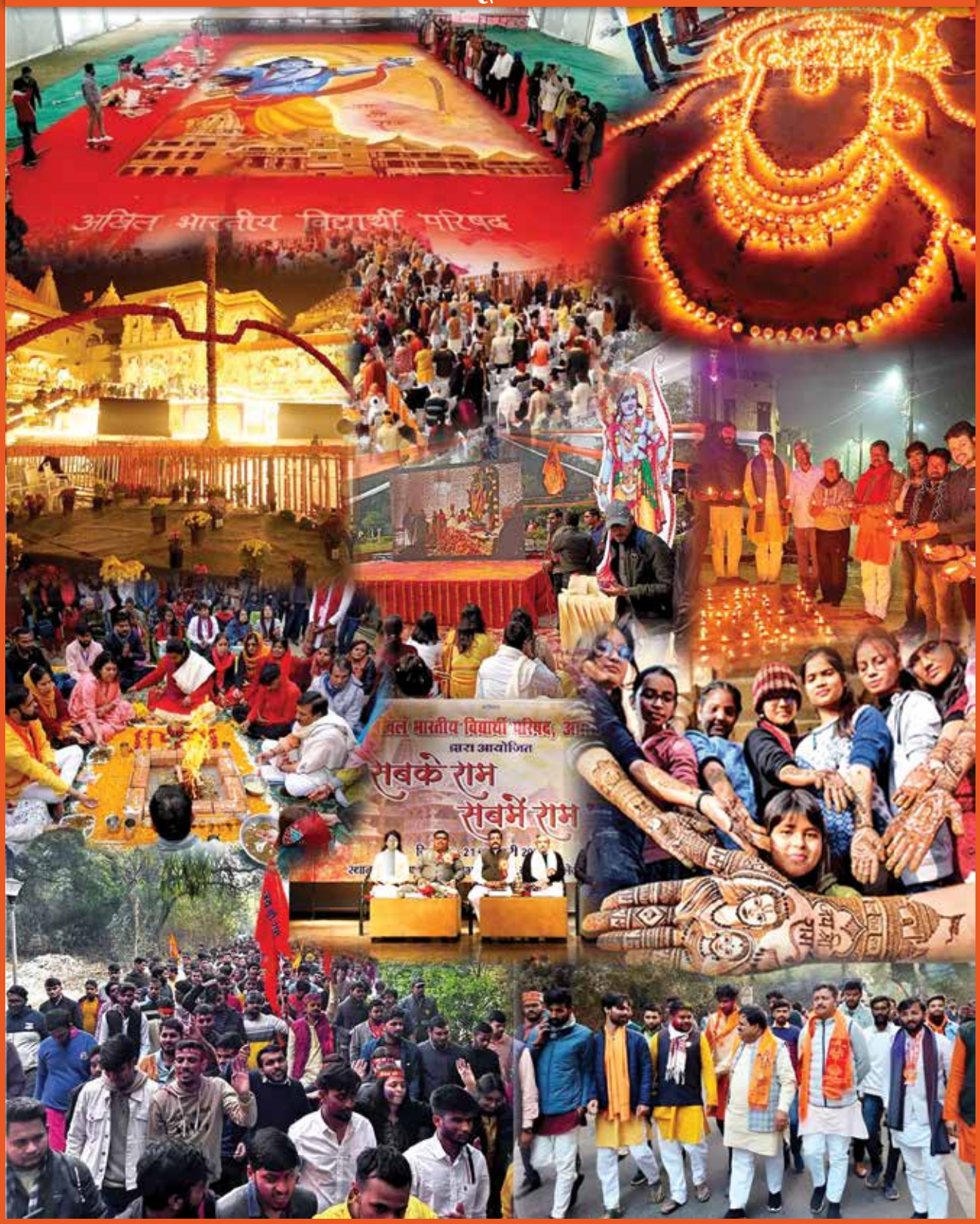
रामरस में डूबी अभाविप